सबला

वर्ष 10 : अंक 1 जागोरी, नई दिल्ली अप्रैल-मई, 1998

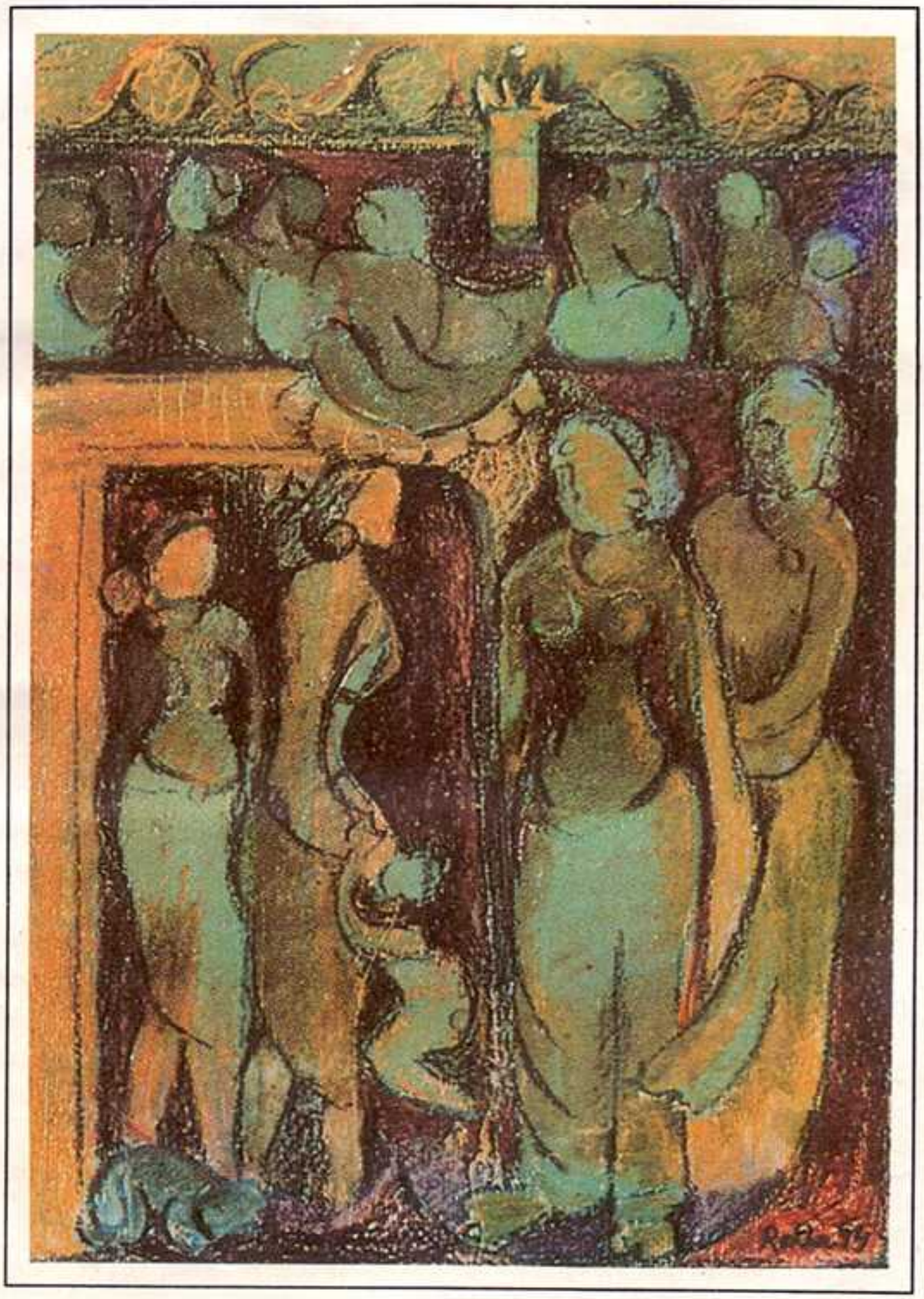

संपादक समूह
कमला भसीन
शारदा जैन
वीणा शिवपुरी
जुही जैन
सुनीता ठाकुर

सहयोग
जागोरी समूह

चित्रांकन
रेखा भटनागर (मुखपृष्ठ)
बिंदिया थापर
राजेश

प्रकाशन
गीता भारद्वाज, जागोरी

वितरण
प्रतिभा गुप्ता

ग्रामीण बहनों की द्विमासिक पत्रिका
शिक्षा विभाग, मानव संसाधन मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा अनुदानप्रदत्त, सुश्री गीता भारद्वाज (जागोरी, सी-54 साउथ एक्सटेंशन-II, नई दिल्ली-110049) द्वारा प्रकाशित। वितरण कार्यालय, 1, दरियागंज, नई दिल्ली-110002। इन्द्रप्रस्थ प्रेस (सी.बी.टी.), 4, बहादुर शाह जफर मार्ग, नई दिल्ली-110002 में मुद्रित।

अप्रैल-मई, 1998

इस अंक में

हमारी बात 1

लेख

एच आई वी/एड्स है महामारी
बचने को चाहिए महा तैय्यारी —कमला भसीन 3

चक्की के गीत और संगठन
—तारा उभे-कुसुम सोनावाने 8

पंडिताइनें—एक बदलती परंपरा —सुहास कुमार 11

बसरा की राबिया —जुही 13

संघर्षरत हैं मानवती आर्य्या —विभा शुक्ला 16

रीति-रिवाजों के नाम पर —सुनीता ठाकुर 25

कहानी

विमला बहुगुणा (एक सच्ची कर्मयोगी)
—वीणा शिवपुरी 20

ज़मानत —विभा शुक्ला 23

सबक —जुही 23

कविता

कल —कमला भसीन 18

लगातार —ज्योत्सना मिलन 18

तलाश —मणिमाला 19

वज़ूद —मीना कुमारी 19

क़ानून और अधिकार

सवाल महिलाओं के मानव अधिकारों का
—सुहास कुमार 29

स्वास्थ्य

काम से जुड़ी स्वास्थ्य की समस्याएं 31

हमारा पठना

शैतान चुहिया 33

कैसी मैं नाज़ों से पली —कमला भसीन 35

कैद —मीना कुमारी 36

हमारी बात

यह दोनों घटनाएं पिछले सप्ताह की हैं। लगभग 35 वर्षीय देवी (नाम बदल दिया है) रोती-कल्पती अपनी मां के साथ आई। देवी के माथे और होंठों के पास चोटों के निशान थे। मैं समझ गई—फिर पति ने मारा-पिटा है और देवी मां के घर आ गई दुखी होकर। पिछले कुछ सालों में यह चौथी बार देवी मार खाकर मां के घर आई है। रो-रोकर कहती है: शर्म आती है यहां आने में। बहुत बार तो रो-पीट कर वहीं सब्र कर लेती हूं।

देवी का पति क्यों मारता है? देवी के सास-ससुर उसकी तरफदारी करते हैं, इससे चिढ़ कर पति और मारता है। कारण जब वह काम से लौटता है (सफाई कर्मचारी है कार्पोरेशन में) तो दारू के नशे में धुत्त होता है और घर आते ही देवी को अपनी गोद में लिटाए रखना चाहता है। चार बच्चे हैं। देवी भी दिहाड़ी पर सफाई कर्मचारी है और घर लौट कर खाना बनाना है, बच्चों को देखना है। पति को यह नागवार गुजरता है। बस, मारपीट।

दूसरी घटना। मति लगभग 45 साल की है। तीन लड़कों की मां। पति सरकारी कार्यालय में चपरासी है—पक्की नौकरी। लेकिन आए दिन पत्नी से झगड़ा, मार-पीट। कारण: पति शक का शिकार है कि उसकी गैरहाजरी में पत्नी ताक-झांक करती है दूसरे मर्दों से। अपने में दोनों पति-पत्नी बहुत शरीफ है। पति को कोई ऐब नहीं लेकिन पत्नी पर बेबुनियाद शक ने उनका घर बरबाद कर दिया। मार-पीट से तंग आकर मति ने अपने पति का घर छोड़ दिया और कोठी में काम कर गुजारा चला रही है। बड़ा लड़का पति के साथ, दो मति के साथ। वे भी काम करते हैं।

आमतौर से घर टूटने का कारण होता है रुपये-पैसे पर लड़ाई-झगड़ा, दारु की लत, दूसरी औरत का चक्कर और सास-ससुर आदि की नोक-झोंक। ऊपर दी दोनों सच्ची घटनाएं हैं। पति-पत्नी के आपसी संबंध कच्चे धागे की तरह हैं। उन्हें बड़े यत्न से संभाल कर चलना होता है। गलती दोनों की हो सकती है लेकिन इस पुरुष-प्रधान समाज में ज्यादातर पति की गलती होती है। पत्नी को समझदारी से, बिना आत्म-सम्मान खोए चुनौती का सामना करना होगा।

शारदा जैन

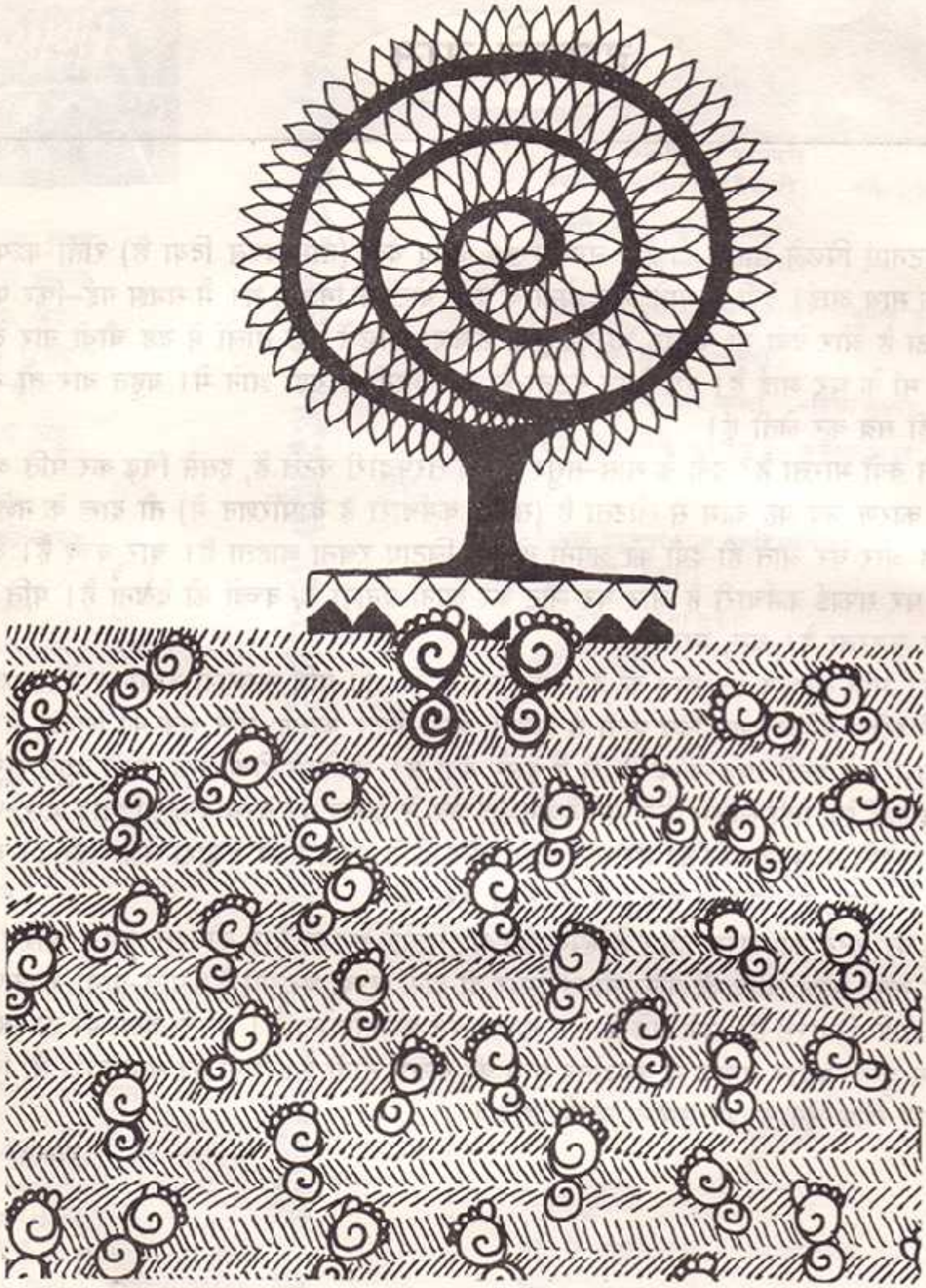

(साभार–जागोरी डायरी, '98)

एच आई वी/एड्स है महामारी
इससे बचने को चाहिए महा तैय्यारी

कमला भसीन

जिधर देखो वहीं है एच आई वी/एड्स का शोर
मुमकिन है ये सुन सुन कर तुम सब हुए हो बोर
फिर भी हम यह लेख लिखकर लाये हैं
और गहराई से इस पर चर्चा करने आये हैं

आज एच आई वी/एड्स के बारे में जानना ज़रूरी है इसलिये एड्स का ढिंढोरा पीटना हमारी मजबूरी है।

एच आई वी/एड्स नये ज़माने की नई महामारी है।

यह आग की तरह फैल रही बीमारी है।
महामारी का मतलब जानते हो न?
वह बीमारी
जो फैले बड़े पैमाने पर
और बड़े पैमाने पर करे मारा मारी

हम वादा करते हैं तुम्हारा ज़्यादा वक्त नहीं लेंगे
यूं तो बात टेढ़ी है पर सीधी कर कहेंगे
और तुम्हें बोर नहीं होने देंगे

वैसे बोर वे होते हैं जो खुद बोरिंग होते हैं
जो नया जानने, समझने की जगह चादर ताने सोते हैं।

एच आई वी/एड्स क्या है प्लीज़ हमें बुझा दो
इन अक्षरों में क्या छुपा है हमें ज़रा समझा दो।

H एच Human ह्यूमन–इन्सान

I आई Immuno deficiency इम्यूनो डैफ़िशिएन्सी, यानि प्रतिरक्षा की कमी या बीमारी से बचाने व लड़ने वाली ताक़त की कमी।

V वी Virus वायरस जीवाणु/कीटाणु

एच आई वी उस वायरस या जीवाणु को कहते हैं जो इन्सानों के अन्दर बीमारी से बचाने वाली

ताक़त को कम करता है ।

HIV POSITIVE वे लोग हैं जिनमें HIV मौजूद हैं।

A ए =Aquired एक्वायर्ड, प्राप्त किया हुआ (यानि जो इन्सानों के अन्दर नहीं है, जो बाहर से आता है।)

I आई =Immuno इम्यूनो प्रतिरक्षा या बीमारी से बचाने वाली ताक़त।

D डी Deficiency डैफ़ीशिएन्सी–कमी

S एस Syndrome सिन्ड्रोम–संलक्षण, अलामत, पहचान।

एड्स बीमारियों से बचाने वाली ताक़त की कमी का सिन्ड्रोम या लक्षण।

एड्स वह दशा है जिसमें शरीर के अन्दर जाने वाले इन्सपेक्टर और डाक्टर ख़त्म हो जाते हैं और हमारा शरीर बीमारी से बचने और उससे छुटकारा पाने की अपनी ताक़त खो बैठता है। एच आई वी जीवाणु हैं व एड्स उनका अन्जाम या नतीजा है। एड्स उस को कहते हैं जिसमें बीमारियों से लड़ने की ताक़त बिल्कुल कम हो जाती है। इसका मतलब है एड्स कोई बीमारी नहीं है–यह बीमारियों से न लड़ पाने की स्थिति या दशा है।

एड्स हो जाने पर हर बीमारी हमें घेर सकती है और हम उसका मुक़ाबला नहीं कर सकते यानि हर बीमारी जानलेवा बन जाती है।

लगे हाथ तीन अक्षर और समझ लें–

STD

S SEXUALLY सैक्शुअली-यौन संपर्क द्वारा।

T TRANSMITTED ट्रान्समिटिड-फैलाई गई, फैलने वाली।

D DISEASE डिज़ीज-बीमारी।

बहुत सी बीमारियां और संक्रमण (इन्फैक्शन यौन संपर्क से लगते हैं जैसे सूज़ाक, सिफ़लिस, जनांगों में फोड़े।)

अगर किसी को एस टी डी है तो उन्हें एच आई वी लगने का ख़तरा बढ़ जाता है, क्योंकि इस बीमारी की वज़ह से जनांगों में फोड़े, फुन्सियां आदि हो जाते हैं और उनके ज़रिए एच आई वी शरीर में घुस सकता है।

आओ अब एच आई वी/एड्स का विस्तार देखें
इसका दिन दूना रात चौगना होता आकार देखें

1981 में पहली बार अमेरिका में एड्स के कुछ केस सामने आए थे और 15-16 साल के अन्दर, वर्ल्ड हैल्थ ऑरगेनाइज़ेशन (W.H.O.) के अनुसार

- दो करोड़ लोगों में एच आई वी/एड्स पहुंच चुका है और ये लोग मौत का सामना कर रहे हैं।
- आज रोज़ाना 8000 नये लोगों में यह जीवाणु घर कर रहा है (यानि हर क्षण नये शिकार, नये बीमार)
- अब 90 प्रतिशत एच आई वी/एड्स के

शिकार ग़रीब देशों में हैं और सबसे ज़्यादा केस अफ्रीका में हैं।

- W.H.O.का अन्दाज़ा है कि एच आई वी अगर इसी तरह फैलता रहा तो वर्ष 2000 तक तीन से चार करोड़ लोग इसके चंगुल में होंगे।

एशिया में जहां जनसंख्या सबसे ज़्यादा है, वहां एच आई वी/एड्स का ज़बरदस्त ख़तरा है। 1984 में थाइलैंड में सबसे पहली बार एड्स का केस सामने आया।

1997 तक एशिया में 37 लाख लोगों में एच आई वी पहुंच चुका था।

आज एड्स को समझना ज़रूरी है, मजबूरी है क्योंकि तेज़ी से यह मौत का नम्बर एक कारण बन रहा है। ये आंकड़े सिर्फ़ उन के बारे में हैं जिनका पता है और कितनों का अभी पता ही नहीं है।

अब समझे एड्स का इतना बुखार है क्यों
इतना हल्ला और इतना प्रचार है क्यों।
अब अपने देश भारत में आयें
यहां क्या हाल है पता लगायें

1986 मद्रास मे पहला एच आई वी मौज़ूद व्यक्ति पाया गया।

1987 – 100 व्यक्ति
1991 – 2000 व्यक्ति
1992 – 11000 व्यक्ति
1997 – 50 लाख एच आई वी मौज़ूद व्यक्ति (अन्दाजा)।

मणिपुर में 1990 में नशीली दवाएं लेने वालों में से 54 प्रतिशत में एच आई वी थी। 1996 में यह 90 प्रतिशत में पहुंच गया था।

ये आंकड़े दिल दहलाने वाले हैं, पर डराने के लिए नहीं सुना रहे, चेताने के लिये बता रहे हैं

मक़सद नहीं है तुम्हें डराना।
हम चाहते हैं आस जगाना,
और सबकी जानकारी बढ़ाना।

इन आंकड़ों से कई बातें समझ में आती हैं–

एच आई वी मौजूद लोगों की संख्या उस बर्फ़ीले पहाड़ (आईसबर्ग) की तरह है जो पानी के नीचे होता है और नज़र नहीं आता।

एड्स के केस उस बर्फ़ीले पहाड़ की चोटियों की तरह हैं जो नज़र आती हैं।

यानि अगर 100 एड्स के केस हैं तो हम अन्दाज़न कह सकते हैं कि HIV इससे दस गुना लोगों में होगा।

दूसरी बात जो समझ में आती है वह है कि एच आई वी/एड्स बहुत तेज़ी से फैलता है

एच आई वी उस ख़त की तरह है जो आपके पास आता है और आप को कहा जाता है कि उसे अपने दस जानने वालों को भेजो।

तीसरी बात एच आई वी/एड्स हर जगह एक तरीके से नहीं फैलता। जैसे मणीपुर में ज़्यादा केस नशीली दवाओं की दूषित सुईयों से फैल रहे हैं। कुछ इलाकों में दूषित खून एच आई वी फैला रहा है। इसलिये एच आई वी/एड्स से बचने के लिये पहले देखना होगा कि यह जीवाणु कैसे फैल रहा है और किन के ज़रिये फैल रहा है।

अगर ठंडे दिमाग से इस समस्या पर नहीं सोचा गया तो हिंसा भी भड़क सकती है। अभी हाल में ख़बर थी कि एक गांव में कोई अन्जान मर्द आ गया। गांव वालों को शक हुआ कि वह एच आई वी/

एड्स लिये हुए है। डर के मारे गांव वालों ने उस की पीट पीटकर जान ले ली। डर, ख़ास तौर से मौत का डर, हमें हैवान बना सकता है।

एच आई वी/एड्स की दुनिया बिना दीवारों की दुनिया है इसमें कोई सुरक्षित नहीं है। डर से बचने का एक तरीका है—जानकारी और समझ।

एच आई वी में इतना भयंकर क्या है।

एच आई वी और एड्स में अन्तर क्या है?

एच आई वी हमारे खून में पाये जाने वाले टी सैल्स को अपना निशाना बनाता है। ये टी सैल्स हमारे शरीर के सुरक्षा तंत्र हैं जो रोग के कीटाणुओं के शरीर में घुसते ही उन पर हमला बोल देते हैं और हमारी रोगों से रक्षा करते हैं। इसी वज़ह से हम हमेशा बीमार नहीं रहते। एच अई वी इन्हीं टी सैल्स में बनते हैं और इन्हीं में पनपते हैं।

एच आई वी संदूषण कुछ ऐसा है जैसे शहर के रक्षक धीरे-धीरे कमज़ोर पड़ते जायें और ख़त्म होते जायें, और उनकी जगह चोर अपना अड्डा बना लें। इस हालत में बीमारी का हमला होने पर कहीं से भी मदद की उम्मीद नहीं की जा सकती। एच आई वी को मारने वाली अभी कोई दवा नहीं है।

एच आई वी धीरे-धीरे एक से दूसरे, तीसरे टी सैल्स को ख़त्म करते हैं और खून में फैलते हैं। जब खून में 200 से कम टी सैल्स रह जाते हैं तब उसे एड्स का केस मानते हैं। इस हालत में बीमारी से लड़ने वाली शक्ति की कमी साफ़ नज़र आती है, क्योंकि हमें बीमारी आ घेरती है और ठीक नहीं होती। एड्स में शरीर का सुरक्षा तंत्र बिल्कुल कमज़ोर पड़ जाता है।

एच आई वी एक जीवाणु है और एड्स उसके संक्रमण का नतीजा है।

एच आई वी पॉज़ीटिव व्यक्ति वह है जिसमें एच आई वी मौजूद है। कई बार वर्षों तक हमारे

शरीर में यह वायरस रह सकता है, लेकिन एड्स की सूरत इख्तियार नहीं करता। इसलिए एच आई वी मौजूद होते हुए भी लोग सेहतमन्द हो सकते हैं या दिख सकते हैं। इस मायने में एच आई वी पॉज़ीटिव लोग, एड्स की दशा वालों से ज़्यादा ख़तरनाक हैं, क्योंकि वे जाने अनजाने में जीवाणु फैला सकते हैं, सैक्स के ज़रिये, सुइयों के ज़रिये अपना खून देकर।

तीन करोड़ लोग जिनमें एच आई वी मौजूद है उनमें से 90 प्रतिशत का पता ही नहीं है कि वे एच आई वी लिये हुए हैं।

अब थोड़ा हम इस पर कह लें

एच आई वी कैसे है फैले

एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति तक एच आई वी के पहुंचने के सिर्फ़ चार रास्ते हैं–

1. किसी एच आई वी मौजूद व्यक्ति के साथ सम्भोग से । यह हाई वे नम्बर 1 है क्योंकि 80 प्रतिशत केस सेक्स के ज़रिये होते हैं।
2. एच आई वी मौजूद खून से सनी नशीली दवायें लेने वाली सुइयों के लेन देन से। यह हाई वे नम्बर 2 है।
3. एच आई वी मौजूद खून चढ़ाने से।
4. एच आई वी मौजूद गर्भवती औरत से उसके भ्रूण और होने वाले बच्चों में यह जीवाणु जा सकता है। एच आई वी मौजूद मां से उसके बच्चे में एच आई वी प्रवेश करने की 30 प्रतिशत संभावना होती है।

सोच समझ कर चल सकते हैं
एड्स को क़ाबू कर सकते हैं।

अगर हम ज़िम्मेदार बन जायें और थोड़ी सी बातें समझ लें तो एच आई वी/एड्स से बचा जा सकता है।

- एच आई वी/एड्स के बारे में पूरी जानकारी ज़रूरी है।
- यह याद रखना ज़रूरी है कि एड्स जान लेवा है, एक बार लगने पर इसका इलाज नहीं है, पर इस से बचा जा सकता है।

बचने के तरीक़े हैं–

सुरक्षित सैक्स

- कम उम्र में सैक्स से बचो। प्यार महसूस करने और दिखाने के और बहुत से तरीक़े हैं।
- यौन साथी एक हो।
- यौन रिश्ते बराबरी वाले ही हों।
- कौन्डोम का इस्तेमाल हर रिश्ते में बेहतर है।
- एस टी डी से बचो और इनका इलाज करवाओ।

सुरक्षित सुईयां

- हमेशा नई, जीवाणु रहित सुईयों का इस्तेमाल करो।
- औरों की इस्तेमाल की हुई सुइयों का कभी इस्तेमाल मत करो।

सुरक्षित खून

- अगर खून चढ़वाने की ज़रूरत है तो एच आई वी के लिये खून की जांच करवा कर ही चढ़वाओ, चाहे खून किसी जानने वाले का हो। (हर बीमारी में होशियार रहो। नर्स, डाक्टर को निडर होकर बात कहो।) □

चक्की के गीत और संगठन

तारा उभे-कुसुम सोनावाने

हमने अपना जागरूकता कार्यक्रम कुछ साल पहले शुरू किया था। इन सालों के अनुभवों से हमने बहुत कुछ सीखा है। शुरू में औरतों के करीब आने, उन्हें अपनी ईमानदारी का भरोसा दिलाने के लिए कई तरीके इस्तेमाल करने पड़े। ऐसे तरीक़े जो उन देहाती औरतों के जीवन का हिस्सा हों। ग्रामीण इलाकों में औरतें काम करते हुए हमेशा गाती हैं। चक्की पीसते हुए, धान रोपते हुए, सूत कातते हुए, लकड़ी का गट्ठर उठाकर जंगल से लौटते हुए वे गीत गाती हैं। मेहनत से भरा, नीरस उबाऊ काम है चक्की पर अनाज पीसना। उसी नीरसता को दूर करते हैं चक्की गीत। जिनमें औरतें अपने दुख-सुख, शिकवे शिकायतें शब्दों में पिरो देती हैं।

संगठन

हम सभी इन गीतों से वाकिफ़ थीं। पुणे ज़िले के देहातों में जहां हम काम कर रही थीं इन गीतों ने हमारा बड़ा साथ दिया। मिसाल के लिए एक गांव में औरतों की एक बैठक बुलाई। औरतों ने कहा कि बैठक दस बजे रात तक खत्म हो जानी चाहिए, क्योंकि वे दिन भर के बाद काफ़ी थकी होती हैं। बैठक के दौरान हममें से एक ने एक चक्की गीत गाया। जिसमें वही मुद्दा उठाया गया था जिस पर हम बात करना चाहती थीं।

नन्ही कच्ची सुपारी बले
भारी अगन के बीच जले
लड़की के काम को कभी
नहीं कोई मान मिले

अपने घर या ससुराल रहे
लपटों के बीच हरियाली जले
चाहे कहीं भी जाए महरिया
बस कर करके काम मरे।

बैठक भोर तक चलती रही। सहभागियों ने कहा "तुमने हमारे गीत गाना शुरू कर दिया तो हमें पता ही नहीं चला कि समय कब बीत गया।"

एक और गांव में औरतें एक घर में इकट्ठा हुईं। जहां बरामदा बड़ा था और 40 से 50 औरतें बैठ सकती थीं। घर की मालकिन ने कहा कि "कहीं और बैठो, मुझे सुबह जल्दी उठना पड़ता है" बैठक में न आने के लिए भी उसने यही कारण बताया। हम दूसरे घर में जा बैठीं और चर्चा शुरू की। चर्चा के दौरान हमने कुछ चक्की गीत गाए।

माता पिता कहें–
बेटी, हम तोहे जहां दिए
ओही, जगह मरियो
लकड़ी जले तो
चूल्हे मां ही जले
ससुरात में सब सहियो
सह लेगी तो का होगा?
सह लेगी तो का होगा?
तोहे देवपन मिलियो।

हमेशा की तरह सभी औरतें साथ देने लगीं। बैठक में जान पड़ गई। सुबह, बैठक में न आने वाली औरत आकर बोली "मुझे तुम लोगों का अपमान नहीं करना चाहिए था। मैं अपने घर में सब सुनती रही। मुझे विश्वास हो गया है कि इस काम से गांव का भला होगा।"

सामाजीकरण

एक और गांव में बैठक चल रही थी। कुछ लड़कियों ने झांका और धीरे से भीतर आ गईं। बड़ी औरतों ने डांट लगाई और उन्हें भगाने लगीं। हमें एक चक्की गीत याद आ गया।

लड़की बन जन्मी
कितनी है चुलबुली
दया मांगे धरती
धीरे चल पगली

हमने यह गीत गाकर कहा "हमें लड़कियों को दबाना सिखाया जाता है। अपनी बैठक में हमें इसके पीछे के कारणों को ढूंढना होगा।"

हमने इस मुद्दे पर चर्चा ज़ारी रखी जिसमें सभी औरतों ने खूब बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया। हमने आम रीति रिवाजों पर सवाल उठाए। औरतों को ये चर्चाएं पसन्द आईं। उन्हें हमारा तरीका भी अच्छा लगा। इस तरह हमारा आपसी सम्पर्क बना हुआ है। एक और गीत का भी हमने इस्तेमाल किया–

किस मूरख ने बनाया ये रिवाज
या तो पिता घर या ससुराल
औरत की ज़िन्दगी के यही दो घाट
तुलसी का पौधा, भगवान के द्वार पर।
बैल की तरह खूंटे उम्र भर
ऐसी है ज़िन्दगी, जो ये जानती
न जन्मती लड़की बन, बन जाती
तुलसी का पौधा, भगवान के द्वार पर।

इन गीतों से अपने आप सवाल निकलते हैं। हम अपने ही जन्म पर क्यों पछताती हैं? ये समाज हमसे एक नए घर में बैल की तरह खटने के लिए कैसे कहता है? हमारी ज़िन्दगी का हम क्या करें? गीत गाए जाते हैं, सवाल उठते हैं, औरतें सोचती

हैं और ताज्जुब करती हैं कि इन गीतों में तो उनकी अपनी कहानियां हैं। कहती हैं—"सच में हमने तो इन गीतों को इस रूप में कभी देखा ही नहीं। इनसे हमें अपने हालात समझने में मदद मिलती है।

हम बैठकों में औरतों से कहती हैं:—

ये चक्की का पत्थर नहीं
पहाड़ों का साधू है
सच कहती हूं ओ सहेली
खोल दे अपना दिल इसके सामने

औरतें आज तक चक्की के पत्थर के सामने अपना दिल खोलती आई हैं, परन्तु अब हाथ की चक्कियों की जगह बिजली की मशीनें आ गई हैं। इसलिए हमें अपना दिल खोलने के लिए और जगहें ढूंढनी होंगी। हमारे सामने कई सवाल हैं। ऐसी बैठकों में ही हमें सवालों के जवाब मिलेंगे और दिल खोलने के लिए जगह भी। □

अनुवाद—वीणा शिवपुरी
साभार...माध्यम

आओ बहना मिलजुल गाएं
जीवन का हर भेद मिटाएं।

हमसे भूल हुई

सबला के पिछले अंक में हमसे दो भूल हुईं जिनके लिए हम क्षमा मांगते हैं–

1. बेटियां सवाल पूछ रही हैं (हमारा पन्ना में) कविता (ये हमारी बेटियां–(एकलव्य) से ली गई थी। जिसका संदर्भ देना हम भूल गए।
2. सतीशराज पुष्करण की लघुकथा (पूवजों की सीख) उनके 'प्रसंगवश' लघुकथा-संग्रह से ली थी। हम उनके आभारी हैं।

संपादक

पंडिताइनें–एक बदलती परंपरा

सुहास कुमार

तोड़-तोड़ के बंधनों को देखो बहनें आती हैं
आओ देखो लोगों देखो बहनें आती हैं
तारीकी को तोड़ेंगी वो खामोशी को तोड़ेंगी
मोहताजी और डर को ले मिलकर पीछे छोड़ेंगी
हां मेरी बहनें अब हर घर को महकाएंगी।

जिन पुरुष-क्षेत्रों में महिलाएं प्रवेश कर चुकी हैं उनमें से एक है पंडिताई क्षेत्र। ज्योति बा-सावित्री फूले, महर्षि कर्वे, पंडिता रमा बाई, सर्वश्री अगरकर के प्रदेश महाराष्ट्र में महिलाओं ने पहल की है तो इसमें कोई ताज्जुब की बात नहीं है।

पूना की पहली पंडिताइन हैं शुभदा जोग, उम्र 65 साल। 45 साल की उम्र से पंडिताई कर रही हैं। 1975 से शुरू हुआ यह सिलसिला इतना फैल चुका है कि पूरे महाराष्ट्र में आज 5 हज़ार पंडिताइनें हैं। कर्नाटक, गोवा और गुजरात में भी यह परंपरा फैल चुकी है। सुश्री शुभदा जोग ही 500 पंडिताइनों को प्रशिक्षण दे चुकी हैं। शुरू में पुरुष-पंडितों का विरोध था, लेकिन स्त्रियां जंग में कामयाब रहीं।

22 साल पहले पूना के पुजारी श्री शंकर थाटे को वहां पुजारियों की कमी का अहसास हुआ। पंडितों के तमाम नखरे थे। वे पैसे भी बहुत मांगने लगे थे। उन्होंने 1975 में "शंकर सेवा समिति" बनाई और शुरू हुआ पंडिताइनों का प्रशिक्षण। डेढ़ सौ महिलाओं ने दाखिला लिया। चार महीने बाद केवल 12 औरतें परीक्षा में पास हुईं। फिर उन्हें श्लोकों और मंत्रों के लेखन आदि का कोर्स भी करना पड़ा। फिर तो जत्थे के जत्थे तैयार होते गए।

पंडिताइनें शादी-ब्याह, गृह प्रवेश, हर तरह के हवन यज्ञ-नवचंडी यज्ञ, गायत्री यज्ञ, विष्णु यज्ञ, महारुद्र यज्ञ, सप्तशति और शांतिपाठ, वास्तुशांत, उदक शांत, पुत्र-पौत्र दर्शन, व्रत उद्यापन, बुरे

नक्षत्रों की शांति वगैरह धार्मिक कामों में महारत हासिल करती हैं।

शुमर्द जोग अपने अनुभव बताती हैं "जब तक महिलाएं घरों, बंद कमरों में पूजा करती रहीं, रत्ती भर भी विरोध नहीं उठा। जब दूसरे घरों में पूजा-पाठ करवाने जाने लगीं तो विरोध का समुद्र उमड़ पड़ा। एक बार पूना के औंकारेश्वर मंदिर में 15-20 पंडिताइनें महारूद्र पाठ का जाप कर रही थीं। पंडितों ने पंडिताइनों को टोका, पर उन्होंने जाप ज़ारी रखा। पंडितों ने पुलिस बुला ली। श्री थाटे की बहस के सामने पुलिस को भी लौटना पड़ा। उन्होंने कहा कि धर्मशास्त्रों में महिलाओं को धर्मकांड करने की मनाही नहीं है।

शादी ब्याह, मुंडन, गृह-प्रवेश आदि में तो वहां महिलाओं ने गद्दी संभाल ही ली है, अब वे श्राद्ध और दाह-संस्कार करवाने की भी तैयारी में हैं। पंडिताइनों ने विदेश-यात्रा भी की है। 1893 में ये स्विटज़रलैंड के ओंकारनाथ आश्रम में पूजा पाठ कराने गईं। इससे उनकी ख्याति अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी हुई। चार महीने का विदेशी यात्रा का इंतज़ाम लंदन के गुजराती समाज ने किया था। जब भारतीय यूरोपीय समाज को इनके वहां जाने का पता लगा तो इनको बहुतों ने पूजा पाठ के लिए बुलाया। अंग्रेज़ों ने भी उन्हें इज्ज़त दी। महाराष्ट्र में पूना के अलावा सांगली, नासिक, सतारा, कराड़, कोल्हापुर, औरंगाबाद, हड़पसर वगैरह शहरों में काफ़ी पंडिताइनें हैं।

पंडिताइनों को लोगों ने इसलिए पसंद किया –

1. वे समय की पाबंद थीं।

2. मंत्रों को शुद्ध ढंग से पढ़ती थीं।
3. दक्षिणा पर अड़ती नहीं थीं।
4. हरेक मंत्र का अर्थ अच्छी तरह समझाती थीं।

जो लोग सच्ची पूजा में विश्वास रखते हैं वे महिला-पंडितों को बुलाने में हिचकिचाते नहीं हैं। शुभदा जोग से किसी ने पूछा कि सब धार्मिक कांड करवाते समय कभी आपको लगा कि आप पुरुष होतीं? उनका जवाब था "महिला होना ही पसंद है। आज महिला में इतना दम है कि वह अपना हक़ मांगती है। हमें खुशी है कि धर्म का प्रचार-प्रसार, कार्य भार समाज ने हम स्त्रियों के हाथ सौंपा है। पहले हम अपने घरों में यह करते थे आज पूरी बाहरी दुनिया में कर रहे हैं।"

हमें इंतज़ार है कि यह परंपरा उत्तर भारत में कब शुरू होगी। □

बसरा की राबिया

जुही

नहीं वह एकल नहीं थी
वह सौ मर्दों के बराबर थी
सर से पांव तक
सच्चाई में लिपटी
खुदा की नेमत से सराबोर
और सभी ज़्यादतियों से आज़ाद।

बारहवीं शताब्दी के सूफी कवि फ़रीदउद्दीन अत्तार ने राबिया-अल-अदाविया के बारे में ये पंक्तियां लिखी थीं। राबिया इस्लाम के चुनिंदा संतों में से एक थीं। उनका दर्ज़ा मीराबाई, कबीर, नानक जैसे संतों के साथ है। वह इस्लाम के इतिहास का एक ऐसा सफ़ा है जिसका आज तक सच्चाई, आज़ादी और दृढ़ निश्चय में कोई सानी नहीं है। मुहम्मद साहब की मृत्यु के पचासी साल बाद जन्म लेने वाली राबिया को इस्लामी इतिहास में "मर्दों के ताज" के नाम से जाना जाता है।

राबिया का जन्म

राबिया का जन्म बगदाद के दक्षिणी हिस्से के एक छोटे से गांव बसरा में हुआ था। वह अपने मां-बाप की चौथी संतान थीं। कहा जाता है कि उनके जन्म पर उनके ग़रीब मां-बाप बिल्कुल खुश नहीं हुए थे। एक तो चार बेटियों का बोझ, ऊपर से घर में आमदनी का कोई ज़रिया नहीं। उनके जन्म के वक्त घर में तेल की एक बूंद भी नहीं थी।

राबिया की मां ने अपने पति से पड़ोसी के यहां से तेल मांगने को कहा जिससे घर में रोशनी की जा सके। पति ने फ़ैसला किया था कि वह किसी से कुछ मांगेगा नहीं। उसने आकर पत्नी से कहा कि पड़ोसी ने दरवाज़ा नहीं खोला। पत्नी रोने लगी और शर्म और मायूसी में डूबा पति घुटनों में मुंह छिपाकर सो गया। तब मुहम्मद साहब उसके ख़ाब में आए। "ग़म न कर बंदे। तेरे घर में रानी का जन्म हुआ है। जाकर बसरा के गवर्नर से कह– हर रात तुम खुदा को सौ दफ़ा याद करते हो, पर पिछली रात तुम भूल गए। उसके बदले में चार सौ दिनार मुझे दो। ऐसा खुदा का हुक्म है।" राबिया के पिता ने ऐसा ही किया। गवर्नर यह सुनकर बहुत शर्मिन्दा हुआ। उसने ग़रीबों में दो हज़ार दिनार बंटवाए और राबिया

के पिता को चार सौ दिनार दिए। साथ ही राबिया के घर आकर उसकी चौखट पर सज़दा किया। समय गुज़रता गया।

थोड़े समय बाद राबिया के मां-बाप की मृत्यु हो गई। बसरा में अकाल पड़ा। राबिया और उसकी बहनें बिछुड़ गईं। राबिया को एक बदमाश उठाकर ले गया। उसने छः दिनार के बदले एक शेख़ के हाथों उसे बेच दिया। शेख़ राबिया को खूब मारता। सख़्त काम कराता, पर राबिया सदैव ख़ुदा का नाम लेती रही। रातभर इबादत करती। कहती— हे खुदा, यह शेख बुरा नहीं है। जो यह कर रहा है वह तेरी मर्ज़ी से है और मेरे लिए यह तेरी मोहब्बत का तोहफ़ा है।" शेख यह सुनकर बहुत पछताया और डर भी गया। उसने राबिया से माफ़ी मांगी और उसे आज़ाद कर दिया।

खुद्दार राबिया

राबिया रेगिस्तान में चलती रही, दिनों-दिन तक। उसका गधा मर गया। साथियों ने कहा, तुम्हारा सामान हम उठा लेते हैं, पर खुद्दार राबिया ने कहा, "मैं अपने भरोसे इस रेगिस्तान में आई हूं, मेरा ख़ुदा साथ है। मैं अपना बोझा खुद उठाऊंगी।" सब उसे तन्हा छोड़कर चले गए। तब राबिया ने हाथ उठाकर ख़ुदा से कहा, "तुम्हारी मर्ज़ी से मैं तुम्हारे घर आ रही हूं? क्या कोई मेहमान के साथ ऐसे पेश आता है। तुमने मेरा गधा भी छीन लिया।" वह इबादत कर ही रही थी कि उसका गधा जी उठा। राबिया की दुआ में इतना असर था।

राबिया हर वक्त ख़ुदा की इबादत में लीन रहती। बांसुरी बजाती और जो मिल जाता उसमें गुजारा करती। सूत कातकर बेचती, पर कभी भीख नहीं लेती। कहती, जब मैंने ख़ुदा से कुछ नहीं मांगा, तो बंदों का क्यों लूं। ख़ुदा सब जानता-देखता है। जब देना होगा देगा। उसे याद क्यों दिलाऊं।"

कहा जाता है कि राबिया बड़ी कड़वी जबान की थी। कभी किसी की चापलूसी नहीं करती थी। न किसी से डरती थी। जो मन में होता उसे बेबाक कह देती। इसलिए उस समय के पीर-संत उससे खफ़ा रहते थे। एक तो औरत, उस पर खुद्दार और तेज़ तर्रार। राबिया कुंवारी भी थी। किसी मर्द के अधीन नहीं रहना चाहती थी। कहती "शादी उनकी होती है जिनका ज़िस्म होता है। मेरा ज़िस्म ख़ुदा का है। मैं उनकी अमानत हूं। फिर कैसी शादी"। उन्होंने लिखा—

दोस्त बनाया, सब कुछ बांटा
ज़िस्म मेरा लोगों ने अपनाना चाहा
पर सब मेरे पास बैठ ही पाए
मेरा दिल उसी ने पाया
जिसको मैंने दोस्त बनाया।"

ख़ुदा तो दोस्त है

राबिया मानती थी कि ख़ुदा हम सब में है। उसकी पूजा हम नर्क में जलने के डर से, या फिर स्वर्ग जाने की लालसा में न करें, क्योंकि केवल एक खराब दास ही सज़ा या ईनाम के डर से काम करता है। फिर ख़ुदा तो दोस्त है, पड़ोसी है —उससे डर कैसा। मैं तो सिर्फ़ उससे सुख-दुख बांटती हूं।"

जीना आसान न था

इन सब बातों से शायद हमें लगेगा कि राबिया बहुत ही आसान जीवन जी रही थी, पर यह सच नहीं है। मर्दों के बीच एक अकेली औरत होकर जीना उस समाज में भी उतना ही मुश्किल था

जितना आज। समाज का मानना था कि निकाह न करके उसने अपना धार्मिक कर्त्तव्य पूरा नहीं किया। इसलिए राबिया पर भी छींटे-कसे गए, लांछन लगाए गए, पर राबिया टस से मस नहीं हुई। एक बार चार मर्दों ने उसे बदनाम करने की कोशिश की। रात को भेष बदलकर उसके घर पहुंच गए। कहने लगे, यह औरत मर्दों को रिझाने के लिए अकेली रहती है। आज देखते हैं कैसे बचती है, पर राबिया पर इसका कोई असर नहीं हुआ। उसने उनकी आवभगत की, सेवा की और

सब कुछ जानते हुए भी ऐसा ज़ाहिर नहीं होने दिया कि वह उन्हें पहचानती है। चारों हार गए। उससे माफ़ी मांगी और उसके अनुयायी हो गए।

इसी तरह कुछ लोगों ने उससे कहा, तुम खुद को संत कहती हो—तुम न तो मर्द हो, न शूरवीर, न हिम्मती, फिर संत कैसे हुई। राबिया ने जवाब दिया, मैं खुद को संत नहीं कहती। मैं न चालाक हूं, न इर्ष्यालु, न घमंडी, फिर संत कैसे हुई।"

राबिया जितने भी दिन जीवित रहीं, अपना खुदा से ही एक रिश्ता बनाया और निभाया। खुदा के लिए उनका प्यार अटूट था। वह मानती थी कि उनका सब कुछ खुदा का है। कहा जाता है कि शाम की नमाज़ के बाद वह छत पर जाती और घंटों खुदा से बात करती। राबिया की ही एक पंक्ति में लिखा है "हे खुदा, तारे चमक रहे हैं, सारा जग सो रहा है। सारे प्रेमी अपने प्रियतम के साथ हैं और मैं तुम्हारे साथ अकेली।"

उनकी सबसे ख़ूबसूरत तहरीर जिससे ईश्वर के प्रति उनके प्रेम का पता चलता है, वह है— "हे खुदा, अगर मैं तेरी इबादत नर्क में जलने के डर से करुं तो मुझे नर्क में जला और अगर स्वर्ग पाने की इच्छा से करुं तो स्वर्ग से महरुम कर, पर अगर तेरी इबादत, तेरे लिए ही करुं तो मुझे अपना ले।"

राबिया-तब और अब

राबिया-अल-अदाविया की मौत के बारे में कुछ निश्चित नहीं है। कहा जाता है कि वह अपना खेत जोतते-जोतते एक दिन गिर पड़ी कुछ कहते हैं उन्होंने समाधी ले ली, पर सबसे ज़्यादा प्रचलित मत है कि वह खुदा से नाराज़ हो गई। वह मक्का हज पर गई। वहां उन्हें माहवारी हो गई और काबा की मस्ज़िद में जाने की इजाज़त नहीं मिली। कहा गया कि वह अपवित्र हैं। बस वह खूब बरसीं, खुदा को बुरा भला कहा और बसरा आ गई। फिर उन्हें न किसी ने देखा न उनके बारे में सुना।

जो भी हो, राबिया आज हम सबके लिए एक मिसाल है। मुसलमान समाज की खुद्दार, एकल और खुदा की दोस्त इस संत की जीवनी से हम प्रेरणा ले सकते हैं। समाज में औरत के लिए

(क्रमशः पृष्ठ 28 पर)

बसरा की राबिया

(पृष्ठ 15 का शेष)

मुश्किलें आज भी हैं, तब भी थीं, पर वह लड़ सकती थी, अपनी मर्ज़ी के मुताबिक जी सकती थी। तो फिर हम क्यों नहीं ऐसा कर सकते। हम सबके अंदर एक राबिया है। ज़रुरत है उसे खोजने, पहचानने और समझने की। यह लेख राबिया बसरा की जीवन गाथा नहीं है। सिर्फ़ उनकी ज़िंदगी पर पड़े हुए पर्दे को उठाने का प्रयास है। □

(मूल लेख-"राबिया ऑफ बसरा"–
ज़ोहरा शिरीन शहाबुद्धीन–पर आधारित)

अप्रैल-मई, 1998

संघर्षरत हैं मानवती आर्य्या

विभा शुक्ला

भारत में पहली महिला फ़ौज की स्थापना की नेताजी सुभाषचन्द्र बोस ने। नेताजी रानी लक्ष्मीबाई रेज़ीमेन्ट की सभी महिला सैनिकों को रानी कहकर सम्बोधित करते थे। उनका विश्वास था कि भारत की आज़ादी और इसके विकास के लिए महिलाओं में जागरूकता उत्पन्न करना और उन्हें संगठित करना आवश्यक है। नेताजी के इस विश्वास की रक्षा की श्रीमती मानवती आर्य्या ने। मानवती आर्य्या सुभाष चन्द्र बोस की निकट सहयोगी और रानी लक्ष्मीबाई रेज़ीमेन्ट की लेफ़्टिनेंट कमान्डिंग ऑफ़िसर थीं।

मानवती जी का जन्म 30 अक्टूबर 1920 को मैक्टीला (बर्मा) में हुआ था। आपके पिता श्री श्यामता प्रसाद पाण्डेय डाक विभाग में सेवारत थे तथा माता श्रीमती छविरानी एक कुशल गृहणी थी। मानवती जी की शिक्षा बर्मी और अंग्रेजी भाषा में आरम्भ हुई। उन्होंने 1941 में हाईस्कूल पास किया और घर के कामों में मां का हाथ बंटाने लगीं।

मानवती आर्य्या में देशप्रेम कूट-कूट कर भरा था, अतः वह इंडियन इंडिपेन्डेन्स लीग की सक्रिय सदस्य बन गयीं। इस लीग की स्थापना रास बिहारी बोस ने की थी।

श्री रासबिहारी बोस अत्यन्त वृद्ध हो चुके थे तथा उनमें अब इतने बड़े संगठन को सम्हालने की शक्ति नहीं रह गयी थी। सौभाग्य से उसी समय नेताजी सुभाष चन्द्र बोस बर्मा पहुंचे। यहीं मानवती जी को नेताजी सुभाष चन्द्र बोस के निकट आने का अवसर मिला।

सुभाषचन्द्र बोस एक कट्टर राष्ट्रवादी नेता थे। उन्होंने 21 अक्टूबर 1943 को अपनी सरकार की घोषणा कर दी। नेताजी ने पहले अपना मुख्यालय सिंगापुर में बनाया, किन्तु बाद में वह इसे रंगून ले आये। इसी समय नेताजी ने रानी लक्ष्मीबाई रेज़ीमेंट का गठन किया तथा उसका प्रधान बनाया कैप्टन लक्ष्मी स्वामीनाथन को। कैप्टन लक्ष्मी स्वामीनाथन आगे चलकर कैप्टन लक्ष्मी सहगल के नाम से प्रसिद्ध हुईं।

मानवती जी आज़ाद हिन्द फ़ौज में एक सक्रिय भूमिका चाहती थीं, अतः उन्होंने आज़ाद हिन्द फ़ौज को मज़बूत करने के लिए ग्यारह पृष्ठों की एक योजना तैयार की और इसे कैप्टन स्वामीनाथन के माध्यम से नेताजी तक पहुंचा दिया।

नेताजी मानवती जी की इस कार्ययोजना से बहुत प्रभावित हुए तथा उन्होंने मानवती को अपने पास बुलाया। मानवती जी के लिए यह बड़ा रोमांचक समय था। उन्होंने नेताजी के विषय में बहुत कुछ सुना था, किन्तु व्यक्तिगत रूप से पहली बार उनसे मिल रही थीं।

मानवती जी ने 17 जनवरी, 1944 को पहली बार नेताजी सुभाष चन्द बोस से भेंट की। मानवती जी राष्ट्रभक्त और राष्ट्रप्रेमी थीं, अतः वह नेताजी से बहुत प्रभावित हुईं और इस भेंट के बाद उन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन देश को समर्पित करने का निश्चय किया। दूसरी तरफ नेताजी ने भी मानवती की प्रतिभा को पहचाना और उन्हें अपनी सरकार आर जी हुकूमते आज़ाद हिन्द में सचिव का पद दे दिया। मानवती जी ने हुकूमते आज़ाद हिन्द की सचिव का पद तो सम्हाल लिया, किन्तु वह इस पद से संतुष्ट नहीं थीं। वह तो रानी लक्ष्मीबाई रेज़ीमेन्ट की सक्रिय सदस्य बन कर युद्ध के मोर्चे पर काम करना चाहती थीं। नेताजी को जब यह मालूम हुआ तो उन्होंने मानवती जी को आज़ाद हिन्द फौज में ले लिया और उनकी क्षमता को पहचानते हुए शीघ्र ही उन्हें रानी लक्ष्मीबाई रेज़ीमेन्ट का लेफ़्टीनेंट बना दिया।

मानवती जी न अपनी फौज की टुकड़ी के साथ कई बार युद्ध के मोर्चों पर काम किया। उन्हें कहीं सफलता मिली तो कहीं असफलता। अप्रैल 1945 में रानी लक्ष्मीबाई रेजीमेन्ट भंग कर दी गयी। मानवती सुभाष चन्द बोस के साथ बहुत कम समय रहीं, लेकिन जितने दिन भी वह उनके साथ रहीं, वे दिन उनके जीवन के लिए एक यादगार बन गए।

मानवती जी एक कुशल प्राध्यापिका, पत्रकार, समाजसेविका और बाल कवियत्री हैं। बच्चों और बाल साहित्य से उन्हें विशेष लगाव है। मानवती जी ने स्कूल में कभी भी हिन्दी नहीं सीखी, किन्तु वह अपना पूरा काम हिन्दी में करती हैं। हिन्दी का ज्ञान उन्हें अपने पिता से मिला था।

भारत आने के बाद मानवती जी कानपुर नर्सरी स्कूल में प्राचार्य हो गयीं। प्रौढ़ साहित्य तो आपने बर्मा में लिखना आरम्भ कर दिया था, किन्तु शिशु गीतों और बालगीतों की रचना कानपुर आने के बाद की।

मानवती जी ने बच्चों के लिए पानी के गीत, गिनती के गीत; शिशु गीत संग्रह, विटामिन गीत नाटिका, मुन्ना सीखेगा भूगोल, नाते-रिश्ते, नाटक चूहों का, दादी मां की सीख, दादी-अम्मा मुझे बताओ आदि अनेक पुस्तकें लिखीं। सन् 1975 में सीलिंग हाउस स्कूल की प्राचार्या बनने के बाद उनके बाल साहित्य लेखन में रूकावट आयी, लेकिन यहां से रिटायर होने के बाद उनका बाल साहित्य लेखन फिर से चल निकला। वह एक लम्बे समय से 'बाल दर्शन' नाम की मासिक पत्रिका का सम्पादन और प्रकाशन कर रही हैं।

मानवती जी एक साहसी, कर्मठ और संघर्षशील नारी का रूप है। वह भारत की आज़ादी को संपूर्ण आजादी नहीं मानती। उनके अनुसार वास्तविक आज़ादी तो तब होगी, जब भूखे-नंगे बच्चों को विकास के समान अवसर मिलेंगे। औरतों का शोषण बन्द होगा और उन्हें समाज में सम्मानजनक स्थान मिलेगा। □

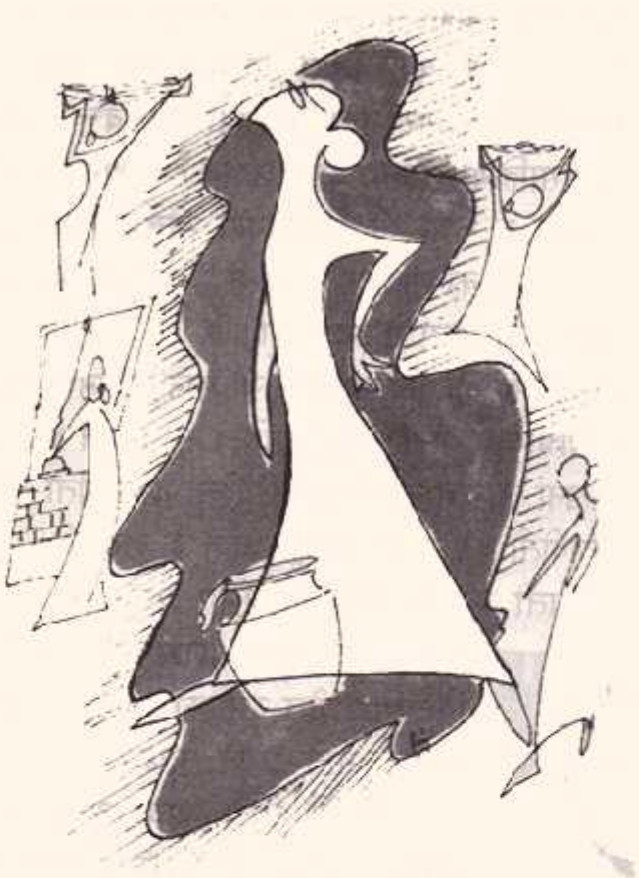

लगातार

ज्योत्सना मिलन

एकाएक
अपने पैरों को देखा तो
भर उठी दहशत से
बरसों पहले जहां गाढ़ा गया था
वहीं खड़ी थी मैं
जिसका/ जो मन आया टांगता गया
थैला, टोपी अंगोछा
या अपनी थकान
और लगता रहा सारे वक्त
कि मैं—चलती रही हूं
लगातार।

'कल'

कल
अचानक जब मैं सीधी खड़ी हुई
तो मेरा सिर
तुम्हारी ठोड़ी से जा टकराया
तुम्हारी जुबान दांतों के बीच दब गई
मुंह खून से भर गया
और तुम चाहते हुए भी बोल न सके
पर मैं
शर्मिन्दा नहीं हूं
इस टक्कर के लिए
जो कभी तो होनी ही थी
टक्कर
मेरे कमर सीधी करने से नहीं हुई
बल्कि इसलिए हुई
कि तुम मेरे रास्ते में थे।

मूल कविता—बिरगिता बुश
अनुवाद—कमला भसी

अप्रैल गई, 1998

तलाश

मणिमाला

उन्होंने कहा–
अन्दर जाओ
ढक लो खुद को
ऊपर से नीचे तक,
समेट लो खुद को
अन्दर से बाहर तक
हवा पश्चिम से आ रही है
धर्म-संस्कृति...सबको बहा रही है
हमारी संस्कृति खतरे में है!

थोड़ी देर बाद
उन्होंने फिर कहा–
बाहर जाओ
कपड़े उतारो
देश का नाम रौशन करो
भारतीय सौंदर्य का प्रदर्शन करो
पश्चिम हमें पछाड़ रहा है
हम पिछड़े जा रहे हैं
हमारा वज़ूद खतरे में है!

जल्दी करो...
जल्दी करो...
अन्दर जाओ...
संस्कृति खतरे में है
बाहर जाओ...
वज़ूद खतरे में है
जल्दी...जल्दी...
अन्दर...अन्दर...
खतरा

संस्कृति पर...
वज़ूद पर...
वे आज्ञा देते-देते हांफने लगे
मैं न अन्दर गई
न बाहर आई
न सिमटी-सकुचाई
न कपड़े उतार पाई
मैं न बढ़ रही थी
न पिछड़ रही थी
खड़ी थी अपनी जगह
खड़ी ही रह गई
मेरी आंखें तलाशती रह गईं
एक रास्ता
जो देह से देह तक न जाता हो...

वज़ूद

मीना कुमारी

माना कि
राह में पड़ी
हूं
पर
ज़मीं से जुड़ी
हूं
मारकर
ठोकर
कहीं का कहीं
यूं ही
नहीं
पहुंचा सकते–
तुम मुझे।

विमला बहुगुणा : एक सच्ची कर्मयोगी

वीणा शिवपुरी

संवेदनशील लड़की

गांव में एक लड़की को रुपयों के बदले बुड्ढे के साथ ब्याह दिया गया। यह सुनकर विमला फूट-फूटकर रोने लगी। वह बार-बार मां से पूछती थी—"मां औरतों को इतने दुख क्यों सहने पड़ते हैं?" वह अपने चारों ओर पहाड़ी औरतों का दुख देखती थी। मीलों चलकर वे चारा, लकड़ी और पानी लाती हैं। खेतों में काम करती हैं। सास ससुर और पति के अत्याचार सहती हैं। कई तंग आकर आत्महत्या कर लेती हैं। विमला के संवेदनशील मन पर इन सबकी गहरी छाप पड़ी।

सन् 1931 में टेहरी गढ़वाल में विमला का जन्म हुआ था। पिता जंगलात के अफ़सर थे। घर में पांच बहनें थीं, पर कभी उन्हें बोझ नहीं समझा गया। विमला पर अपनी मां का गहरा असर पड़ा। पुराने समय की होते हुए वे बड़े खुले विचारों की औरत थीं। वे ऊंचनीच, जाति-पांति को नहीं मानती थीं। उन्होंने बच्चों को सादा जीवन उच्च विचार का आदर्श सिखाया। विमला के दो भाई स्वतन्त्रता की लड़ाई में शामिल थे। विमला भी घर-घर से सामान इकट्ठा करती तथा अन्य प्रकार की मदद करती थी। वह और ज़्यादा सक्रिय होना चाहती थी।

समाज सेवा का रास्ता

सन् 1950 के आस-पास अनेक लोग समाज निर्माण के काम से जुड़ने लगे। पहाड़ी औरतों के

पढ़ना बहना लिखना बहना
खूब समझकर कहना सुनना
दूजे की बातों में न आना
अपने मन की कलम पकड़ना

साभार—अंकुर

कठिन जीवन की तरफ़ भी ध्यान गया। महात्मा गांधी ने कौसानी में लक्ष्मी आश्रम खोलकर काम की शुरूआत तो कर दी थी। यह आश्रम सरला बहन की देखरेख में चलता था। भाई के कहने पर विमला को आश्रम में काम करने का मौका मिला।

आश्रम में कार्यकर्ताओं का जीवन बहुत कठिन था। मुंह अंधेरे से रात गए तक, कड़ी मेहनत करनी पड़ती थी। भोजन बहुत सादा, बिना मिर्च मसाले का होता था। चाय की मनाही थी। घर से पहली बार बाहर निकली लड़कियों को यह सब बहुत मुश्किल लगा, परन्तु विमला डटी रही। धीरे-धीरे उसे समाज सेवा के काम में आनन्द आने लगा।

कुछ समय बाद विनोबा भावे ने भूदान आंदोलन शुरू किया। उन्होंने गांधीवादी कार्यकर्ताओं को मदद के लिए बुलाया। विमला यहां भी आगे

रही। बीस साल की विमला अब भूदान आंदोलन से जुड़ गई। गांव गांव जाकर ज़मींदारों से, धनियों से दान में जमीन मांगती। वह अपने दल में खूब सक्रिय हुई। इस दुबली पतली छोटी सी लड़की की मजबूत इच्छा शक्ति देख, सभी दंग थे।

जीवन में एक और मोड़

अब तक विमला ने अपने जीवन की दिशा तय कर ली थी। उसने अपना जीवन गांवों के उत्थान के लिए समर्पित कर दिया था। सौभाग्य से उसके पिता ने इस बात का ध्यान रखते हुए विमला के लिए एक लड़का चुना।

विमला एक सच्ची कर्मयोगी है। उन्होंने अपने लिए एक रास्ता चुना और जीवन भर उस पर चलती आई। पत्नी और मां के रूप में हर कर्त्तव्य को पूरा किया। साथ ही अपनी स्वतंत्र पहचान भी बनाई। विमला वास्तव में सशक्त औरत की मिसाल है।

सुंदरलाल बहुगुणा ने सिर्फ़ आज़ादी की लड़ाई मे ही हिस्सा नहीं लिया था, वह स्थानीय कांग्रेस पार्टी का सचिव भी था। उसके सामने बढ़िया राजनीतिक भविष्य था। विमला का मन तो राजनीति में नहीं, समाज सेवा में रमा था। सुंदरलाल से मिलकर विमला ने अपने मन की बात कही और दोनों ने एक फैसला किया। सुंदरलाल और विमला किसी पिछड़े गांव में रहकर वहां के लोगों की सेवा करेंगे। इसके लिए उन्होंने टेहरी से 31 कि.मी. दूर सिलयारा गांव चुना।

पर्वतीय नवजीवन आश्रम

इस प्रकार शुरू हुआ सुंदरलाल बहुगुणा और विमला का नया जीवन। विमला गांव के बच्चों को पढ़ाती। लड़कियों की देखभाल करती। साथ ही खेती में मदद भी करती। उन्होंने आश्रम की उजाड़ जमीन को खेती योग्य बनाया। पेड़ पौधे लगाए। हरियाली बढ़ाई।

बहुगुणा दम्पत्ति ने मिलकर वहां सामाजिक और पर्यावरणीय आंदोलन शुरू किया। समय के साथ सुंदरलाल बहुगुणा का कार्यक्षेत्र और फैला। वे काम के सिलसिले में दूर-दूर जाने लगे। घर परिवार और आश्रम की पूरी ज़िम्मेदारी विमला ने अपने कंधों पर उठा ली थी। अनेक बार मुश्किलें आईं जिन्हें विमला ने अकेले ही संभाला।

इस सबके साथ विमला व्यापक आंदोलनों का हिस्सा भी बनी। जैसे मन्दिरों में जनजातीय लोगों को प्रवेश के लिए आंदोलन। शराब विरोधी आंदोलन तथा चर्चित चिपको आंदोलन। विमला ने धरने दिए, पुलिस की लाठियां खाई और जेल भी गई। विमला ने जीवन का जो रास्ता चुना था उसमें कठिनाइयां ही कठिनाइयां थीं। यहां तक कि कुदरत ने भी उन पर कहर ढाया। सन् 91 के भूकम्प से सिलयारा का आश्रम करीब करीब नष्ट हो गया। चारों तरफ़ गांवों में तबाही आ गई।

सन् 92 में टेहरी बांध परियोजना आंदोलन के चलते विमला को अन्य कार्यकर्ताओं के साथ गिरफ्तार कर लिया गया। विमला ने ग्यारह दिन तक भूख हड़ताल की।

एक सशक्त औरत

आज चाहे राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर सुंदरलाल बहुगुणा ज़्यादा जाने जाते हैं, परन्तु विमला ही वह मज़बूत चट्टान है जिसके सहारे वे

आगे बढ़ पाए। विमला एक सच्ची कर्मयोगी है। उन्होंने अपने लिए एक रास्ता चुना और जीवन भर उस पर चलती आई। पत्नी और मां के रूप में हर कर्त्तव्य को पूरा किया। साथ ही अपनी स्वतंत्र पहचान भी बनाई। विमला वास्तव में सशक्त औरत की मिसाल है। □

सारे जमाने की हम ही जड़ें हैं
हमारी बदौलत सब आगे बढ़े हैं
हम क्योंकर यूं नीचे पड़े हैं
हम भी आगे बढ़ जायें तो
बड़ा मजा आए।

ज़मानत

विभा शुक्ला

दिसबर की कड़कड़ाती सर्दी में भी वह सबेरे-सबेरे घाट पर पहुंच जाता और दोपहर तक कपड़े धोता। शाम तक सूखे कपड़े लेकर वापस लौटता और प्रेस करता।

उसे घुटनों तक पानी में चार-पांच घण्टे खड़ा रहना पड़ता था, इसलिए थोड़ी सी कच्ची पी लेता था। शराब की गर्मी उसे ठण्डे पानी में खड़े रहने की शक्ति देती थी।

उसकी आयु उन्नीस-बीस वर्ष की होगी। अभी पिछले महीने ही उसकी शादी हुई थी।

एक दिन एक सिपाही आया और धोबी को घाट से पकड़ ले गया। उस पर शराब पीकर सड़क पर दंगा-फसाद करने का आरोप था।

धोबी को छुड़ाने के लिए अनेक सगे सम्बन्धी और रिश्तेदार गए, लेकिन थानेदार ने उनकी ज़मानत नहीं ली। सब परेशान थे कि क्या करें?

शाम को सात बजे धोबिन को आवश्यक पूछताछ के लिए थाने बुलाया गया। सबके मना करने पर भी धोबिन वहां चली गई।

थानेदार ने उससे रात भर पूछताछ की और सबेरे धोबिन की ज़मानत पर धोबी को छोड़ दिया गया। □

सबक

जुही

चाहो तो क्या नहीं हो सकता अपने विश्वास और हिम्मत के बूते पर सात समन्दर लांघकर भी अपने हक की लड़ाई लड़ने वाली और अपने साथ धोखा करनेवाले को सजा दिलाने वाली एक साहसी बहन की है ये कथा।

सुमेरसिंह नौसेना में कैप्टन था। हरियाणा के एक छोटे से गांव हरदोई का रहने वाला था। उसका बाप भी नौसेना में ही काम करता था। जिस समय बाप नौकरी में था उस समय उसके एक बड़े अफ़सर ने सुमेरसिंह को अपना बेटा ही मान लिया था। उसे पढ़ाया-लिखाया और नौसेना में अच्छी नौकरी दिलाई। इसी का फल था कि आज सुमेरसिंह कैप्टन हो गया था। साल में एक-दो बार सुमेरसिंह अपने गांव आता। गांव में उसकी पत्नी कमली और एक बेटा था। मां-बाप भी गांव में रहते थे। खेती-बाड़ी का काम था जो कमली संभालती। सब कुछ ठीक चलता रहता था।

एक बार सुमेरसिंह का जहाज कोचीन गया। वहां उनकी ट्रेनिंग थी। करीब दो साल का पड़ाव था। ट्रेनिंग के दौरान मेस के रसोइए की सोलह साल की बेटी गौरी से सुमेरसिंह की मुलाकात हुई। गौरी बहुत ही सुन्दर और होनहार लड़की थी। सुमेरसिंह उसे मन ही मन पसन्द करने लगा। गौरी अपने बाप की मदद करने अक्सर मेस आ जाती थी। एक रोज उसका बाप बीमार पड़ गया। काम की सारी ज़िम्मेदारी गौरी पर आ गई। ऐसे में सुमेरसिंह ने गौरी की बहुत मदद की। कभी उसके बाप की दवा लाता। कभी रात को उसे घर छोड़ने जाता, पर बाप की हालत सुधरी नहीं और एक दिन वह गौरी को अकेला छोड़कर चला गया।

गौरी पर जैसे पहाड़ टूट गया। सुमेरसिंह ने मौके की नज़ाकत का पूरा फायदा उठाया। उसने गौरी को यकीन दिलाया कि वह उससे प्यार करता है और उससे शादी करना चाहता है। उसने एक मन्दिर में गौरी से शादी भी कर ली।

सुमेरसिंह गौरी के घर नहीं रहता था। ट्रेनिंग के बाद शाम को उसके पास जाता। उसने गौरी को बताया कि ट्रेनिंग खत्म होने के बाद वह उसे

लेकर कोचीन में ही रहेगा। अपना तबादला करा लेगा। उनके एक बेटी रेशमी भी हो गई।

डेढ़ साल बीत गया, लेकिन सुमेरसिंह ने गौरी पर यह जाहिर नहीं होने दिया की वह शादी-शुदा है और एक बेटे का बाप भी। गौरी बहुत खुश थी। वह अपनी बेटी और अपने पति के लिए ही जी रही थी।

एक दिन अचानक सुमेरसिंह चला गया। गौरी से मिला भी नहीं। गौरी ने सुना तो रोती-रोती नौसेना के दफ़्तर पहुंची। अफ़सर ने उसे तसल्ली देकर थोड़ी इंतजार करने को कहा।

छः महीने गुजरे। गौरी की बेचैनी बड़ी। उसने सुमेरसिंह का पता लिया और रेशमी को साथ लेकर सीधी हरदोई पहुंची।

हरदोई पहुंचकर उसे दूसरा सदमा पहुंचा। सुमेरसिंह के मां-बाप ने बताया कि वह तो पहले ही शादीशुदा है। उसका एक बेटा भी है। उसकी शादी तो बचपन में ही हो गई थी। फिर भी उन्होंने गौरी को अपने घर में रखा और सुमेरसिंह को तार कर दिया। सुमेरसिंह आया तो पर उसने गौरी को पहचानने से साफ़ इंकार कर दिया। यहां तक कि उसे धक्के देकर घर से बाहर निकल दिया।

गौरी रेशमी को लेकर रोती-पीटती रही। अब उसे समझ में आया कि सुमेर सिंह ने उसके साथ धोखा किया था। कानून की नज़र में भी उसकी शादी नाजायज़ थी। पहली पत्नी के जीवित रहते बिना तलाक लिए दूसरी शादी करना ग़ैर-कानूनी है। ऐसी शादी को कानून मान्यता नहीं देता। फिर उसके पास अपनी शादी का कोई गवाह या सबूत भी नहीं था। उसे समझ नहीं आ रहा था वह क्या करे। वह सोच रही थी, अब मेरा क्या होगा। रेशमी का क्या होगा। उसका गुजारा कैसे होगा।

साथ ही उसे सुमेरसिंह पर बहुत गुस्सा आ रहा था। उसने तय कर लिया, वह हिम्मत नहीं हारेगी। सुमेरसिंह को उसके किए की सज़ा मिलनी ही चाहिए। अगर आज वह आज़ाद घूमता रहा तो उसके जैसे लोग अपने ओहदे का रोब जमाकर भोली-भाली लड़कियों का फ़ायदा उठाते रहेंगे।

गौरी ने वकील से सलाह ली। वहां उसे पता चला कि सुमेरसिंह की आमदनी और जायदाद पर उसका कोई हक नहीं है, लेकिन अगर वह यह साबित कर सके कि सुमेरसिंह ने उसके साथ बाकायदा ब्याह किया था और रेशमी उसी की औलाद है तो उसका काम बन सकता है। तब सुमेरसिंह की जायदाद और आमदनी से रेशमी के पालन-पोषण का खर्चा लिया जा सकता है। कानूनन दूसरी शादी नाजायज़ है, पर उस शादी से पैदा हुई संतान नाजायज़ नहीं मानी जायेगी।

(क्रमशः पृष्ठ 28 पर)

सबक

(पृष्ठ 24 का शेष)

बस रेशमी वापस कोचीन गई। साथ में मन्दिर के पुजारी और पंच थे। कचहरी में उसने साबित कर दिया कि सुमेरसिंह ने उससे शादी की थी। कुछ-एक साथियों ने भी इस बात की गवाही दी। जांच से यह भी मालूम चला कि जिस अस्पताल में रेशमी पैदा हुई थी उसके रजिस्टर में बाप की जगह सुमेरसिंह का नाम था। उसने अपने दस्तखत भी वहां किए थे।

सबूतों के आधार पर गौरी केस जीत गई। सुमेरसिंह को रेशमी के भरण-पोषण का खर्च देना पड़ा और अपनी सम्पत्ति में हिस्सा भी। सुमेरसिंह की नौकरी चली गई। उसे जुर्माना और सजा भी हुई।

गौरी ने रेशमी के लिए उसका हक़ तो जीत लिया, पर इससे हमें सबक लेना चाहिए कि मंदिर की शादी ग़ैर-कानूनी होती है। □

रीति-रिवाज़ों के नाम पर

सुनीता ठाकुर

समाज में पितृसत्ता जितनी पुरानी है उतना ही पुराना है नारी-शोषण का इतिहास। हमने उन्हें अधिकार दिए तो उन्हें आदत ही हो गई राज करने की। पितृसत्तात्मक समाज में औरत पर नियंत्रण के अलग-अलग रूप हैं– रूप अनेक पर लक्ष्य सबका एक कि कैसे औरत को दबाकर रखा जा सके। एक भय कि कहीं हम ताक़तवर न हो बैठें–इसलिए बहाने गढ़ लिए गए हम पर काबू पाने के लिए–कभी धर्म के नाम पर, कभी रीति-रिवाज़ों के नाम पर, कभी सामाजिक मर्यादा के नाम पर। तमाम बंधनों में बंधकर भी हम समझ पाते कि यह सब हमारी महानता नहीं। हमारे शोषण का ही रूप है।

मोटे तौर पर देखें तो चार शक्तियां हैं औरत की–

1. उसकी यौनिक शक्ति
2. उसकी प्रजनन शक्ति
3. उसकी काम करने की अनन्त क्षमता-उसका श्रम।
4. उसकी आज़ादी–

अगर हमारी ये चारों क्षमताएं पूरी आज़ादी से फलें-फूलें तो कहीं ज्यादा सुखी जीवन हम जी सकते हैं पर हमारी इन्हीं क्षमताओं पर रोक लगाई गई–अलग-अलग नाम-रूपों में।

यौनिक शक्ति पर नियंत्रण

कुदरत ने औरत को अपनी नियामतों से संवारा है–वह खुद में पूर्ण व्यक्तित्व है। उसका शरीर सृष्टि की तमाम क्षमताओं को समेटे है–जितना सत्य और जितना सुन्दर हम सोच सकते हैं वो

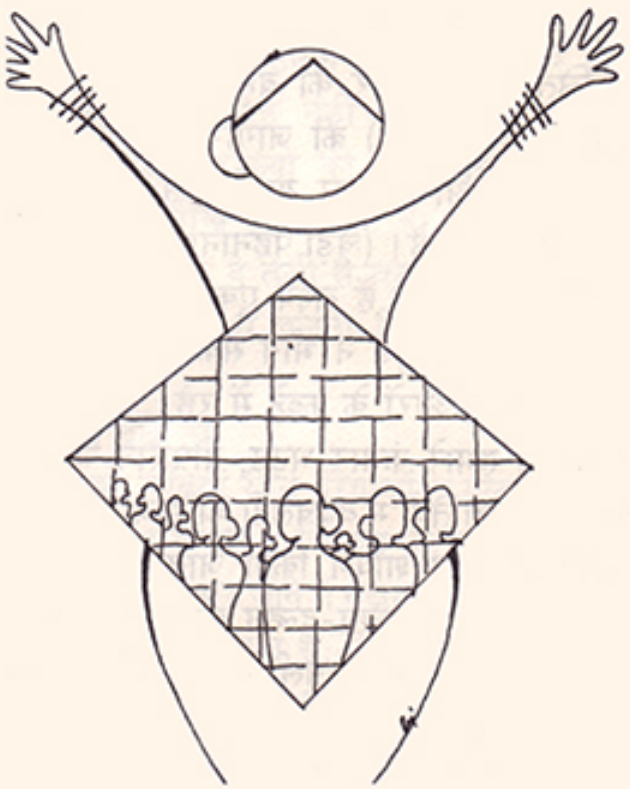

हमारे शरीर में ही समाया है–और यह सच गले नहीं उतरता हमारे मर्दाना समाज को–लिहाजा–'सुन्नत' जैसी प्रथाएं गढ़ ली जाती हैं कि उसे अपने ही शरीर की सुखद अनुभूतियों से महरूम कर दिया जाए। अफ्रीका और मध्य एशिया के देशों में फैली है यह प्रथा-औरत की भग्नाशा को कांच के टुकड़े या किसी ब्लेड या चाकू से काट देते हैं। पेशाब का रास्ता और माहवारी के लिए

जगह छोड़कर सिल दिया जाता है। अनुमान है कि लगभग बीस लाख लड़कियां हर साल इस शोषण का शिकार होती है। इस समय लगभग 12 करोड़ महिलाएं (विश्व में) इस शोषण को झेल रही हैं। औरत की यौनिकता, काम इच्छा को दबाने के लिए यह प्रथा बनाई गई है। माना जाता है कि इससे औरत की सुन्दरता भी बढ़ती है और उसकी इज़्ज़त की भी रक्षा की जा सकती है।

गुजरात के कई गांव में आज भी द्रोपदी प्रथा प्रचलित है। परिवार की बहू परिवार के सभी जवान मर्द (भाइयों) की जागीर बना दी जाती है। विधवा औरत देवर या जेठ से शादी करने को विवश होती है। (चूड़ी पहनाना, चादर डालना आदि) रूप तमाम हैं लक्ष्य एक वह आज़ादी से आने शरीर का सुख न भोग सके। हमेशा किसी और के लिए औरों के कब्ज़े में रहे।

यही नहीं हमारे कंजार भट्ट, गोपालन जाति व आदिवासी जातियों में बदचलनी का इल्जाम लगाकर औरत का यौन शोषण किया जाता है। कंजार भट्ट समुदाय में दूल्हा-दुल्हन कोरी सफेद चादर पर संभोग करते हैं। अगली सुबह कपड़े को देखा जाता है। यदि उस पर खून के दाग नज़र न आएं तो मान लिया जाता है कि लड़की बदचलन है और दूल्हा उसे छोड़ देता है। गोपालन जाति में बदचलनी के इल्जाम से घिरी-औरत सामाजिक अपमान और बहिष्कार का शिकार होती है।

ध्यान देने की बात है कि यौनिकता, शरीर और सुन्दरता हमारी निजी बातें होकर भी दूसरों के द्वारा नियंत्रित होती हैं। क्यों? प्रायः देखा जाता है कि आपसी द्वेष, बदले की भावना और दुश्मनी से भी औरत इन तमाम यौन शोषणों का शिकार होती हैं। मर्दों की बात न मानने की सजा बदचलनी बेहयाई के इल्जामों में होती है। बहुत बड़ी सच्चाई है कि जब मर्दानगी का ज़ोर मर्दों पर नहीं चलता तो उसका शिकार औरत होती है। रूप किसी न किसी बहाने से उसका यौन-शोषण-शारीरिक शोषण।

प्रजनन शक्ति पर नियंत्रण

औरत की सबसे बड़ी शक्ति है उसकी बच्चा जनने की क्षमता। माहवारी-चक्र एक सहज मासिक प्रक्रिया होती है जो औरत की उर्वरा शक्ति का

प्रतीक है। माहवारी चक्र के दौरान या जचकी होने के सवा महीने तक औरत की छाया से भी दूर रहने जैसी मान्यताएं उसके आत्मविश्वास को कमजोर करती हैं। उससे अछूतों जैसा व्यवहार कर उसमें मानसिक तौर पर हीनता का भाव भर दिया जाता है।

यही नहीं लड़की पैदा होने पर उसी को दोषी ठहराना, बांझ जैसे आरोप लगाकर उसे बराबर प्रताड़ित किया जाता है। लड़की पैदा होती है तो लड़के की मांग पर उसे बार-बार गर्भ धारण करना पड़ता है और यहां तक कि गर्भपात जैसी पीड़ा को भी झेलना पड़ता है—या कहें कि वह झेलती है, क्योंकि और कोई रास्ता नज़र नहीं आता।

श्रम पर नियंत्रण

गृहलक्ष्मी, गृहस्वामिनी जैसी उपाधियों से लादकर घर की चारदीवारी में बैठा दी जाती हैं हम। तुम नाजुक हो, सुन्दर हो, घर की शोभा हो—घर संभालो, सजो-संवरो बस यही तुम्हारा धर्म है—बचपन से ऐसे संस्कार जाने-अनजाने मन में रोप दिए जाते हैं और ताउम्र औरत होने की कल्पनाएं मन में पाले हम सब झेलती रहती हैं। घर के काम की कोई कीमत नहीं होती। वह तो औरत की ज़िम्मेदारी है और घर की इस ज़िम्मेदारी के साथ बाहर जाकर भी काम करने वाली औरतों को दोहरी मार झेलनी पड़ती है। कितना भी पढ़ लिख जाओ, कितना भी पैसा कमा लो पर घर के काम से कोई निजात नहीं—वह तो उसका धर्म है—और धर्म का कोई मूल्य नहीं होता।

घर-बाहर की ज़िम्मेदारी निभाओ, बच्चे पैदाकर खानदान का नाम बढ़ाओ क्योंकि यही तुम्हारा धर्म है और इस धर्म पालन की चक्की में परिवार और समाज के पाटों के बीच हमारा वजूद पिसता रहता है— तमाम व्रत, उपवास, पूजा-पाठ पति की उम्र के लिए, पुत्र की कामना, उसकी रक्षा के लिए करते हम भूल जाते हैं कि हम कहां हैं—एक क्षण सिर्फ़ अपने लिए, अपनी तरह, अपने अस्तित्व को पूरी तरह पाने की, प्यार करने की कामना में ताउम्र कोल्हू के बैल की तरह खटती रहती हैं हम, क्योंकि यही परम्परा है।

चलने फिरने की आज़ादी पर रोक

चीन जैसे देशों में प्रथा है लड़कियों के पैर बांधे जाने की। लड़कियों के पांव में बचपन में ही लोहे के छोटे-छोटे जूते पहना दिए जाते हैं—इस विश्वास से कि उनके पांव सुन्दर और छोटे हों—पर सच्चाई यह नहीं है—पांव बांधने की पीड़ा ताउम्र लड़कियों को धीरे-धीरे संभलकर चलने की सीख दे जाती है कि वे अपनी सीमा में रहें, कि वे तेजी से चलना, बढ़ना अपनी मर्ज़ी से आज़ादी से चलना-फिरना न सीखें।

ध्यान से देखें तो

प्रायः सभी रूढ़ियों रीति-रिवाज़ों के मूल में धारणा एक ही काम करती है कि हम आज़ादी से अपनी तरह, अपने बूते पर जीने में सक्षम न हो सकें—औरत जब तक शरीर से मन से, पैसे से मर्दों की गुलाम रहेगी तभी तक उनकी पूछ हो सकती है। अपनी इसी मंशा के तहत तमाम षड़यंत्र रचा जाता है और अपनी महानता के मोहपाश में हम सब भूल जाते हैं। मां-बहन, पत्नी, बेटी, बहू बनने के फेर में भूल जाती हैं एक औरत की तरह जीना।

सब कुछ समझबूझकर भी चुप रह जाती हैं—भाग्य के नाम पर कि हमारा भी उद्धार करने वाला कोई आएगा। हमें याद रखना होगा कि अहिल्या पत्थर न बनती यदि उसने गौतम को उसकी ईमानदारी पर इल्ज़ाम की सजा दी होती। सीता

अग्नि परीक्षा या वनवास का शिकार न होती यदि उसने राम से पवित्र होने का सबूत मांगा होता। हम इसीलिए हर शोषण का शिकार होती हैं कि नारीत्व, शर्म, लोकलाज के भय से चुप रहती हैं। हम भूल क्यों जाते हैं कि अन्याय का विरोध करने के लिए ही प्रकृति ने हमें ज़ुबान दी है, ग़लत को पहचानने के लिए ही आंखें दी हैं और अपने हक की बात सुनने के लिए ही कान दिए हैं। हमें दिमाग दिया है कि हम सोचें क्या सही है और क्या गलत।

किसी को क्या अधिकार है कि ज़मीन-जायदाद हो या पारिवारिक क्लेश, हमें आपसी दुश्मनी का शिकार बनाए—किसी को हम ये हक दें ही क्यों कि वह हमारे देवी या डायन होने का फैसला करे। हम भूल क्यों जाते हैं कि पुरुष को जीवन, जीने की शक्ति और जीने का हक हमने ही दिया है। वह हमारी ताकत, हमारे समर्पण, हमारे विश्वासों के बलबूतों पर बढ़ता है—तो फ़िर हम बेचारगी क्यों लादें। अन्याय करने वाले से सहने वाला ज़्यादा गुनहगार होता है। द्रोपदी का चीरहरण न हुआ होता यदि अपनी चौखट लांघने वाले दुश्शासन की टांगे उसने तोड़ दी होती। शक्ति हमारी अनन्त है, पर हम भूल चुके हैं कि उसका उपयोग करने का अधिकार और क्षमता भी हममें हैं। यह क्षमता संगठन में छिपी है—यह अधिकार हमें विरोध करके ही मिल सकता है क्योंकि मांगने से कुछ मिलता नहीं है और छीनने से बहुत कुछ मिल सकता है। □

सवाल महिलाओं के मानव अधिकारों का

सुहास कुमार

मानव अधिकारों के बारे में कुछ जानकारी आपने पिछले अंक में पढ़ी होगी। पढ़कर कुछ सवाल मन में उठे होंगे। मसलन महिलाओं के मानव अधिकारों की बात अलग से क्यों उठी? क्या महिलाओं की गिनती मानवों में नहीं होती? आज भी समाज में महिलाओं को दोयम दर्ज़ा ही मिला हुआ है। उनकी खास पूछ नहीं होती। उनकी ज़रूरतों उनकी भावनाओं की ओर ध्यान नहीं दिया जाता। जहां तक उनके अधिकारों का सवाल है हालात और भी खराब हैं।

आइए देखें कि कहां और कैसे महिलाओं को उनके अधिकार नहीं मिलते–

1. गरीब देशों की महिलाएं खरीदी व बेची जाती हैं। यह अनैतिक व्यापार दिनों दिन बढ़ रहा है। उन्हें वधू की तरह खरीदा जाता है और वेश्या-वृत्ति के लिए बेचा जाता है। वे पर्यटन का हिस्सा बनाकर मनोरंजन का साधन बनाई जाती हैं। बाल-विवाह, बिना मर्ज़ी का विवाह, सती, देवदासी, विधवाओं को घर से निकाला जाना, फिर से ब्याह की मनाही भी उनके मानव अधिकारों का उल्लंघन है। गरीब परिवारों में भी उन्हें कई बार बेच दिया जाता है और उनसे वेश्या-वृत्ति भी कराई जाती है।
2. दरअसल पितृसत्तात्मक ढांचा ही भेदभाव पर आधारित है। यहां लिंग, जाति व वर्ग के आधार पर भेदभाव होता है। इसके ढांचे में ही कुछ की दासता शामिल है और दासों का शोषण होता है।
3. विकास के नए ढांचे में भी महिलाओं और निर्धनों का शोषण शामिल है। महिलाओं के सस्ते श्रम व यौनिक सेवाओं के बल पर देश की आमदनी बढ़ाई जाती है। उनको पूरा मेहनताना न देकर, ज़बर्दस्ती देह-व्यापार करवाकर उनके मानव अधिकारों का उल्लंघन किया जाता है।
4. सरकार व पुलिस हर तरह से उन्हें दबाती है। सैन्य यौनिक हिंसा तथा दंगों के दौरान हिंसा एवं यौनिक हिंसा, पुलिस हिरासत में

अत्याचार एवं यौन हिंसा सभी महिलाओं के मानव अधिकारों के उल्लंघन हैं।

कब, कितने बच्चे पैदा करें, अपने शरीर पर अपना अधिकार उनके पैदायशी हक़ हैं। मगर सरकार तमाम तरह के खतरनाक गर्भ निरोधक उन पर थोपती है। जनसंख्या कम करने के बहाने धीरे-धीरे गरीब महिलाएं ही कम हो रही हैं।

5. धर्म और संस्कृति के नाम पर भी महिलाओं के मानव अधिकार उन्हें नहीं मिल पाते। जीने का अधिकार, सुरक्षा का अधिकार, स्वास्थ्य व शिक्षा का अधिकार बुनियादी मानव अधिकार हैं और जहां कहीं निजी धर्मों के अधिकार और इनमें टकराव हो तो पहले दिए गए अधिकारों की रक्षा पहले होनी चाहिए।
6. दलित, निर्धन व जन जातीय महिलाओं के साथ और भी बुरा बर्ताव होता है। उनके साथ ज़्यादा हिंसा, सामाजिक व क़ानूनी भेदभाव किए जाते हैं। वे अमानवीय ढंग से रहने को मजबूर हैं। उन्हें आम नागरिक आज़ादियां भी नहीं मिली हुई हैं।

संयुक्त राज्य संघ ने जो मानव अधिकारों की सूची बनाई उसमें इन सब तत्वों को ध्यान में नहीं रखा गया। बाद में एक विशेष अनुच्छेद जोड़ा गया। 1979 में संयुक्त राष्ट्र संघ ने महिलाओं के प्रति हर प्रकार के भेदभाव समाप्त करने की घोषणा की। इसे "सीडा" कन्वेंशन का नाम दिया गया, 3 सितम्बर 1981 को यह लागू किया गया। भारत ने 25 जून 1993 को इसे कुछ संशोधन के साथ मान लिया। अतः भारत सरकार वचनबद्ध है कि महिलाओं के साथ महिला होने के आधार पर किसी भी तरह का भेदभाव नहीं किया जाएगा लेकिन संयुक्त राष्ट्र संघ ने भी जो नियम बनाए हैं उनमें महिलाओं को कमज़ोर करने वाले सामाजिक, राजनैतिक व सांस्कृतिक ढांचों का ज़िक्र कहीं नहीं है। जब तक इस बात को समझा व स्वीकारा नहीं जाएगा, महिलाओं को उनके मानव अधिकार नहीं मिल सकते। बाकी तो सब ऊपरी लीपा-पोती है।

एक और बात जिसकी ओर ज़्यादा ध्यान नहीं दिया जाता है, वह है--महिलाओं के मानव अधिकार निजी व बाहरी क्षेत्र में। दरअसल दोनों में कोई टकराव नहीं है। दोनों ही जगह भेदभावों की वजह से उन्हें उनके अधिकार नहीं मिल पाते।

सन् 1994 में वियना में मानव अधिकार सम्मेलन में महिलाओं के मानव अधिकारों को मानव अधिकारों की सूची में शामिल कर लिया गया। सन् 1995 में संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा बीजिंग में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय महिला सम्मेलन में भी इसकी पुष्टि की गई। यह यों ही नहीं हुआ। बैंकॉक में 25-28 मार्च 1993 में एशिया पैसिफ़िक क्षेत्र के बहुत से गैर सरकारी संगठन मिले और उन्होंने अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर मिलकर महिलाओं के मानव अधिकारों की मांग उठाई। सुझावों की एक लंबी सूची बनाकर वियना सम्मेलन 1994 में पेश की गई।

अभी भी लागू होने के स्तर पर बहुत सी कमियां हैं, पर महिलाओं और महिला संगठनों को अपना दबाव बनाए रखना है। बिन मांगे चाहे और कुछ भले ही मिल जाए अधिकार कभी नहीं मिले। □

काम से जुड़ी स्वास्थ्य की समस्याएं

अपने रोज़मर्रा के जीवन में हम अपनी तक्लीफ़ों, अपने दर्दों की तरफ़ कोई ध्यान नहीं दे पाते। इन तक्लीफ़ों के बहुत से शारीरिक और भावात्मक कारण होते हैं। ज़रूरत है इन तक्लीफ़ों के प्रति एक सहज दृष्टिकोण रखने की।

औरतों के दर्द उनके काम से जुड़े होते हैं इसलिए वे पेशेगत ख़तरों की श्रेणी में आते हैं। मिसाल के लिए खेती के मौसम मे लगातार दस बारह घंटे तक झुके रहकर धान रोपने का काम, कुएं से भारी भारी बाल्टियां खींचना। 40 से 50 किलो ईंधन लकड़ी उठाकर दस से बारह किलोमीटर चलना, इमारतें बनाने में मज़दूरी करना आदि। इस तरह के काम जब लगातार दिनों महीनों, बरसों करने पड़ते हैं तो उससे कमर, गर्दन और कंधों का गंभीर और लम्बा चलने वाला दर्द शुरू हो सकता है।

हालांकि मांसपेशियों के एक समूह के ज़्यादा इस्तेमाल से वे मज़बूत हो जाती हैं और शरीर की सहनशक्ति बढ़ जाती है, परन्तु लगातार ग़लत स्थिति में शरीर को रखने या बहुत भारी बोझ उठाने से हड्डियों के ढांचे को नुकसान पहुंचाता है और उससे दीर्घकालिक दर्द शुरू हो जाता है। इस प्रकार के दर्द से कैसे निपटा जा सकता है? दीर्घकालिक समाधान तो यह हो सकता है कि औरतों को काम करते समय शरीर ठीक स्थिति में रखने का प्रशिक्षण दिया जाए। साथ ही उन्हें रोज़मर्रा के कामों की थकान दूर करने वाले नए वैज्ञानिक उपकरणों की जानकारी दी जाए।

एक ओर एक ख़ास वर्ग की औरतें अधिक काम

के कारण दुख उठाती हैं दूसरी ओर अन्य वर्ग की औरतों के पास काम न होने या काम की कमी होने तथा आरामदेह जीवन के कारण यहां वहां दर्द उठाना पड़ता है। शरीर के दर्द को दूर रखने के लिए नियमित शारीरिक श्रम जरूरी है ख़ासतौर पर ज्यों ज्यों व्यक्ति की उम्र बढ़ती है।

कटिवात् (लुम्बेगो) बहुत सख्त पीठ का दर्द होता है इसमें दर्द टांग की पूरी नस में महसूस होता है। इस दर्द का सम्बन्ध निचली पीठ से होता है। इसी प्रकार से गर्दन का दर्द बांह तक फैल सकता है या एक बांह में सुइयां चुभती महसूस हो सकती हैं। इस तकलीफ़ में गरदन की रीढ़ की दो गुट्टियों के बीच नसें दब रही होती हैं।

इस प्रकार के दर्दों में दर्द निवारक दवाइयां या मांसपेशियों को ढीला करने वाली दवाइयां मना होती हैं। यदि दर्द की शुरूआत के समय ही व्यक्ति उस पर ध्यान न दे और बिस्तर पर पूरा आराम न करे तो आगे चलकर पीठ को सहारा देने वाली मांसपेशियां ढीली पड़ सकती हैं। यह नौबत आने पर रीढ़ की दोनों गुट्टियां अन्त में एक दूसरे पर गिर जाती हैं। यदि नसें बहुत अधिक दब जाएं तो हमेशा के लिए नुकसान हो सकता है। इसके अलावा दोनों गुट्टियों के बीच की चकती को भी हानि हो सकती है। सपाट बिस्तर पर पूरी तरह कई दिनों तक आराम करना ज़रूरी होता है। □

अनुवाद बीणा शिवपुरी
साभार–टच मी टच मी नॉट

महिला शक्ति गीत

धरती प्रकृति हूं मैं,
जननी अदिति हूं मैं,
देवी दाता शक्ति हूं मैं।

ऋतु आए, ऋतु जाए,
मन मेरा बदला जाए,
बसंत की ऋतु हूं मैं,
ग्रीष्मों की अग्नि हूं मैं
बरखा की बूंदे हूं मैं,
धरती प्रकृति हूं मैं...।

ऋतु आए, ऋतु जाए,
मन मेरा बदला जाए,
सरसों सी खिल आऊं,
अग्नि सी तप जाऊं,
बरखा सी भर आऊं,
बूंदों सी बिखर जाऊं,
शरद शीतल हो आऊं।

साभार...निनाद–1998,
संपादन-अनुराधा जोशी

हमारा पन्ना

सबला

शैतान चुहिया

एक थी चिड़िया और एक थी चुहिया। परस्पर धरम-बहिनें हुईं। एक दिन चुहिया ने चिड़िया से कहा—चलो, अपन पहाड़ के झरने में नहाने चलें। चिड़िया ने कहा—चलो, तुम्हारी इच्छा है तो मैं मना क्यों करूं? दोनों बहिनें नहाने चली। चिड़िया तो फड़ाफड़ स्नान करके बाहर निकल आई, पर चुहिया गुचलकिये खाने लगी। डूबती डूबती बोली-'चिड़कल बहिन बाहर निकाल ए! तब चिड़िया फुर्र से उड़कर डूबती चुहिया की पूंछ को चोंच में पकड़ बाहर निकाल लिया।

चुहिया थी बेहद चंचल। जिन्दा बाहर निकलते ही मरने की बात भूल गई। बोली—चलो अपन, बेर खाने चलें। चिड़िया ने कहा—चलो, तुम्हारी इच्छा है तो मना क्यों करूं? दोनों बहिनें एक बोरड़ी के मीठे बेर खाने लगीं। चिड़िया ने तो झपाझप बेर खा लिए, पर चंचल चुहिया कांटों में फंस गई। बोली चिड़कल बहिन, जरा कांटों से बाहर निकाल ए!

चिड़िया ने तो उसी क्षण अपनी बहिन का संकट देख उसे कांटों से बाहर निकाल लिया, पर चुहिया तो बाहर निकलते ही पिछला संकट भूल गई। रास्ते में एक भैंस पर उसकी नजर पड़ी तो बोली—चलो अपन इस भैंस का दूध पीयें? चिड़िया तो कहते ही फुर्र से उड़ी सो भैंस के उबाड़े पर जाकर बैठ गई। छक कर दूध पीया, लेकिन चुहिया अपने तीखे दांतों से भैंस के स्तन कुतरने लगी। भैंस ने पूंछ की फटकार से चुहिया को नीचे गिरा दिया। ऊपर से पोटा किया सो वह चंचल चुहिया उसके नीचे दब गई। दबे स्वर में बोली: बहिन, जरा बाहर निकाल ए!

सुनते ही चिड़िया ने अपनी चोंच व अपने पंजों से पोटा बिखेरना चालू किया। देखते देखते दबी चुहिया को बाहर निकाल लिया, परन्तु चुहिया

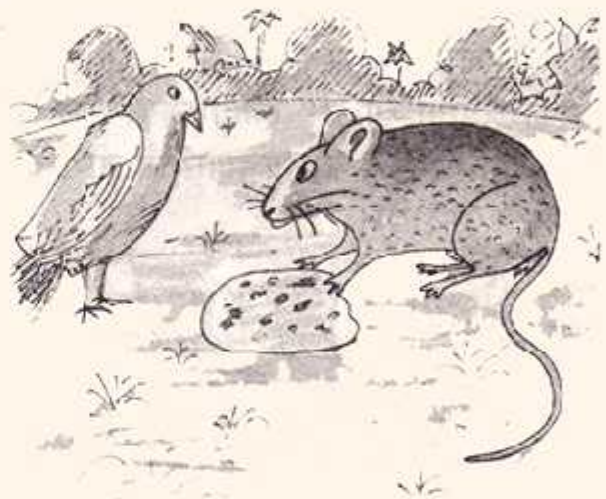

की चंचलता का कोई अंत थोड़े ही था। एक ऊंट सामने आया तो बोली—चलो, अपन ऊंट की सवारी करें। चिड़िया तो सुनते ही फुर्र से उड़ी, सो ऊंट के सिर पर बैठ गई, फिर उसकी पीठ पर बैठकर मजे से सवारी गांठ ली, किन्तु चुहिया के चढ़ने से ऊंट के पैर पर खाज चलती तो वह जोर से टांग पटकता और चुहिया नीचे गिरती....करते करते एक बार चुहिया पांव के नीचे दब गई। ऊंट के वज़न से उसका श्वास ही थम गया। चीं चीं करती बोली—चिड़कल बहिन

मेरे प्राण बचा ए, मैं तो मरी।

चिड़िया ने बहिन को उबारने के लिए तुरंत उपाय सोच लिया। कान से सट कर पंख फड़फड़ाने लगी तो ऊंट झड़क कर दौड़ा। चुहिया का कचूमर निकलते निकलते बच गया। फिर चिड़िया उसे समझाते हुए कहने लगी—बहिन, ज्यादा चंचलता अच्छी नहीं, कभी बेमौत मारी जायेगी, पर चुहिया ने उसकी सीख पर कान ही नहीं दिया।

आगे जाते जाते चुहिया को एक रोटी मिली। चिड़िया ने कहा—चुहिया बहिन, थोड़ा टुकड़ा तो मुझे भी दे, पर चुहिया ने तो बिलकुल ही मना कर दिया। बोली—मुझे मिली है रोटी। तुझे क्यों दूं। तब चिड़िया ने कहा—मैंने तुझे झरने से डूबती हुई को बचाया था न। इतनी जल्दी भूल गई। चुहिया बोली—मुझे क्यों बचाया? मैं तो हर हर गंगा नहा रही थी।

तब चिड़िया ने कहा—मैंने तुझे बेर के कांटों से बचाया था न, इतनी जल्दी भूल गई। चुहिया बोली, क्यों बचाया री? क्यों बचाया? मैं तो कच कच कान छिदवा रही थी। तब चिड़िया ने कहा—क्यों री, मैंने तुझे भैंस के पोटे से दबती हुई को निकाला था न। इतनी जल्दी भूल गई। चुहिया बोली—मुझे क्यों बचाया री? क्यों बचाया? मैं तो अपनी कमर खुंदवा रही थी।

तब चिड़िया ने कहा—मैंने तुझे ऊंट के पैर से मरती को बचाया था न, इतनी जल्दी भूल गई। चुहिया बोली—मुझे क्यों बचाया री? क्यों बचाया? मैं तो कट-कट चनक निकलवा रही थी। चिड़िया ने सब तरह से समझाना चाहा, किन्तु शैतान चुहिया नहीं मानी। कुट कुट करती अकेली ही सारी रोटी खा गई। चिड़िया को जरा भी नहीं दिया।

जाते जाते वे दोनों एक किसान के खेत पर पहुंचीं। किसान अपने खेत में ज्वार काट रहा था। उसने एक बड़ा भार बांधकर उठाया। घर की ओर जाने लगा तो चुहिया बोली—चलो अपन इसके घर चलें। तब चिड़िया ने कहा—मैं अब तेरे साथ कहीं नहीं चलने की। यहीं खेत में ठहरूंगी। ज्वार का चुग्गा चुगूंगी। बच्चों को संभालूंगी। तेरी शैतानी तू भुगत, पर चुहिया तो बेहद चंचल थी। कुछ न कुछ शैतानी किये बिना उसे सुहाता ही नहीं था। बोली—जैसी तेरी मर्जी, मैं तो इसके घर जाऊंगी। किसान का पीछा करती हुई, आखिर उसके घर पहुंच ही गई। कुछ ही देर में सारे घर को छान मारा। बिल बनाने के लिए कोई ठीक जगह नहीं मिली। अंत में चाकी के नीचे बिल खोदकर उसमें डेरा जमाया।

एक दिन चुहिया दाना खाने में मग्न थी। पास ही एक बिल्ली ताक में खड़ी थी। एकदम झपटी और चुहिया को मुंह में पकड़ लिया। चुहिया चीं चीं करती बहुत ही चिल्लाई, पर वहां चिड़िया

(क्रमशः पृष्ठ 36 पर)

शैतान चुहिया— (पृष्ठ 34 का शेष)

बहिन के बिना कौन बचाये? देखते देखते बिल्ली उसे मार कर निगल गई। किसान और उसकी घरवाली दोनों अचरज भरी निगाहों से यह तमाशा देखते रहे। उनकी कुछ भी समझ में नहीं पड़ा कि क्या माजरा हो गया? □

लेखक के विषय में जानकारी नहीं।

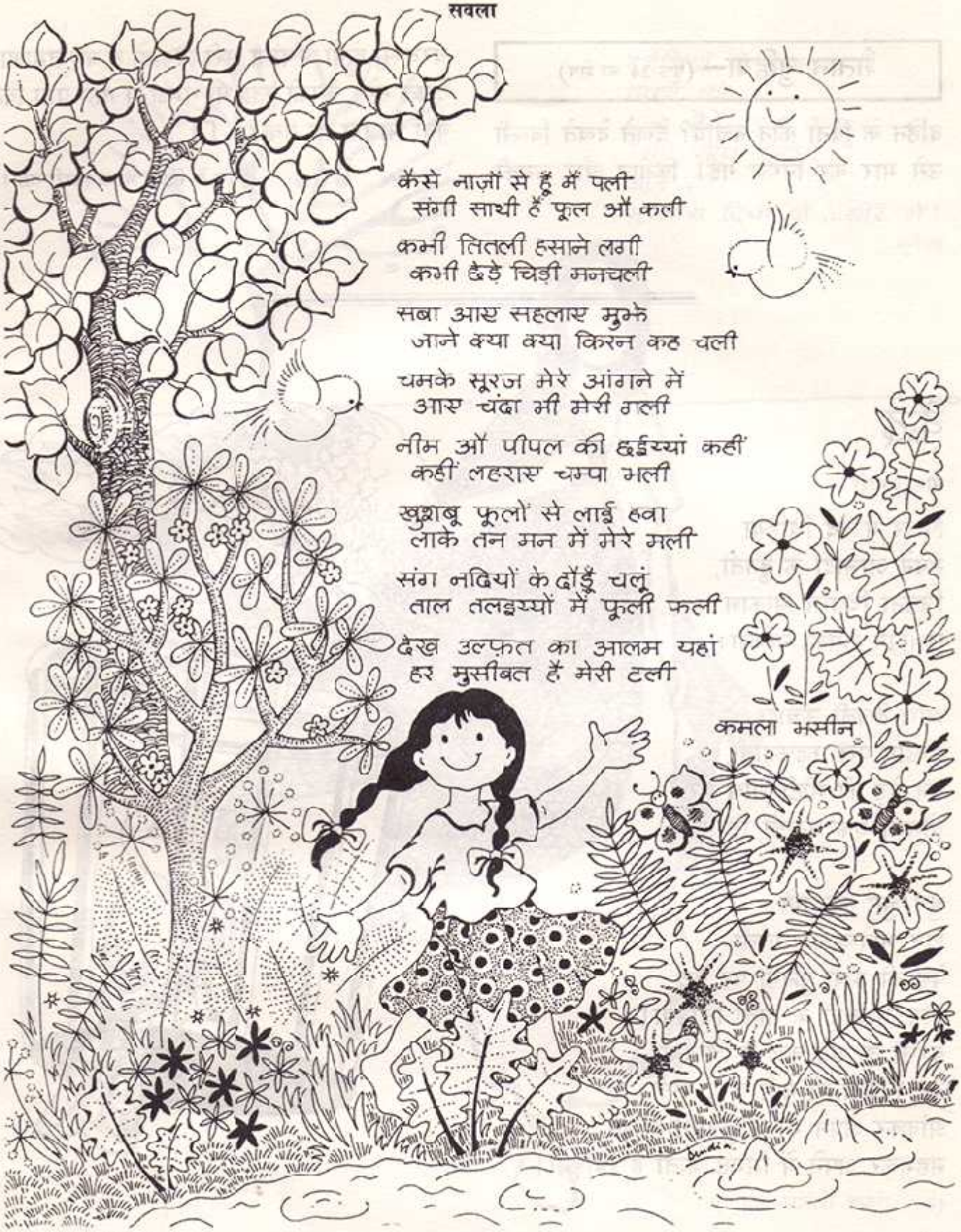

कैसे नाज़ों से हूं मैं पली
संगी साथी हैं फूल औ कली

कभी तितली हसाने लगी
कभी छेड़े चिड़ी मनचली

सबा आए सहलाए मुझे
जाने क्या क्या किरन कह चली

चमके सूरज मेरे आंगने में
आए चंदा भी मेरी गली

नीम औ पीपल की छईय्यां कहीं
कहीं लहराए चम्पा भली

खुशबू फूलों से लाई हवा
लाके तन मन में मेरे मली

संग नदियों के दौड़ूं चलूं
ताल तलइय्यों में फूली फली

देख उल्फ़त का आलम यहां
हर मुसीबत है मेरी टली

कमला भसीन

क़ैद

मौना कुमारी

पिंजरे में बंद चिड़िया
सपने आज़ादी के बुनती,
जितना दिखता आकाश
खुलापन उसका नापती।

आंखें देखतीं ऊंचाई
इच्छाएं पंख फड़फड़ातीं,
घने पेड़ की मोटी शाख पर
घोंसला एक बनाती चिड़िया।

चुग-चुग कर दाने
दिन भविष्य के पालती,
पेड़ की ऊंची फुनगी पर बैठ
गीत आज़ादी के गाती चिड़िया।
करती तो सब कुछ है चिड़िया
बस पिंजरा ही नहीं छोड़ पाती
झांककर अपने भीतर बुलाती हूं उसे
सहमकर अपने में सिमट जाती है चिड़िया।

हथेलियों में बैठकर
वक्त को...
पूछा मैंने–एक सवाल–
"मेरे साथ चलोगे?"
और...
मुस्करा दिया वो ...धीरे से!

सुनीता

(साभार–जागोरी डायरी, '98)

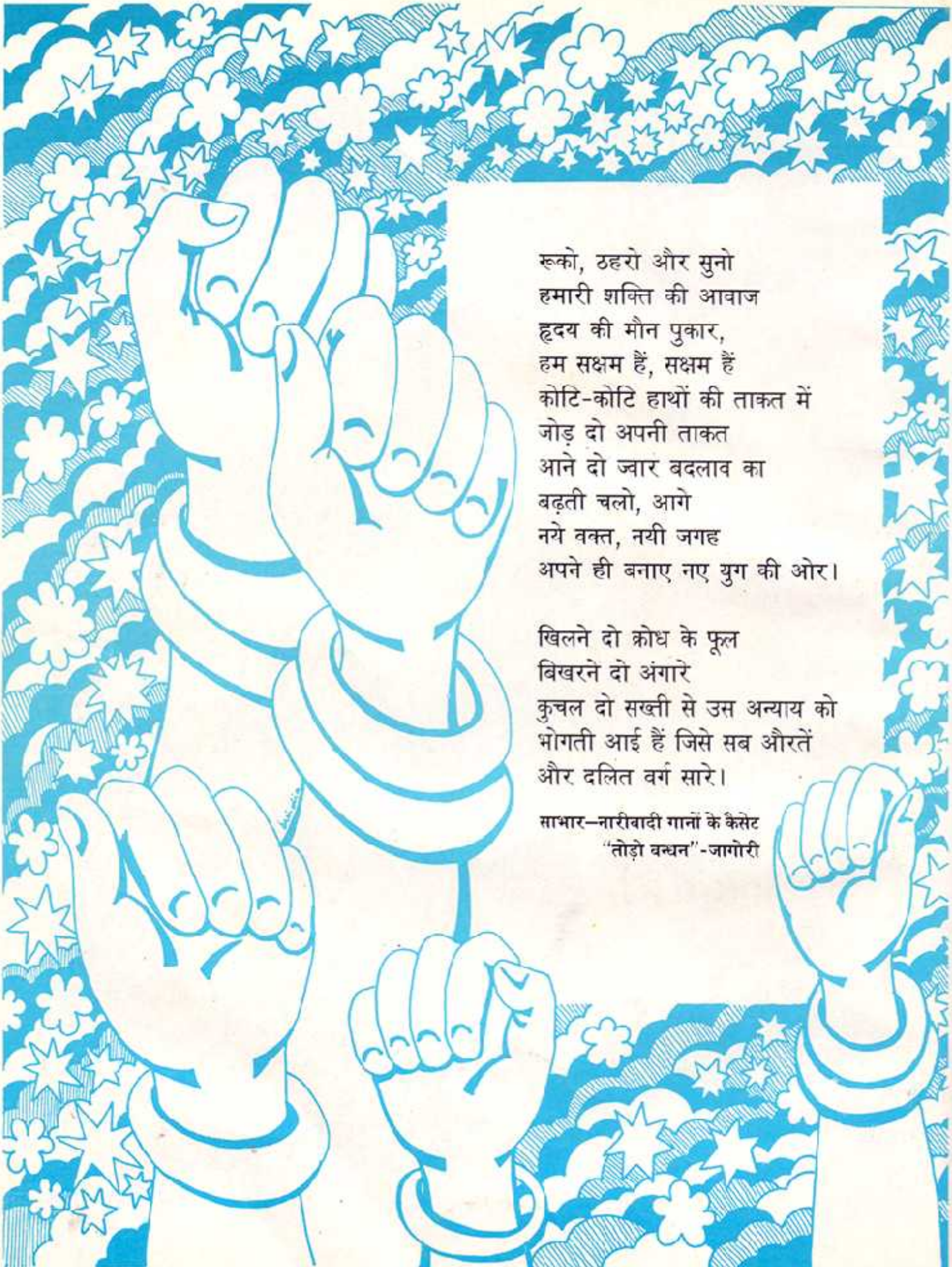

रूको, ठहरो और सुनो
हमारी शक्ति की आवाज
हृदय की मौन पुकार,
हम सक्षम हैं, सक्षम हैं
कोटि-कोटि हाथों की ताक़त में
जोड़ दो अपनी ताकत
आने दो ज्वार बदलाव का
बढ़ती चलो, आगे
नये वक्त, नयी जगह
अपने ही बनाए नए युग की ओर।

खिलने दो क्रोध के फूल
बिखरने दो अंगारे
कुचल दो सख्ती से उस अन्याय को
भोगती आई हैं जिसे सब औरतें
और दलित वर्ग सारे।

साभार—नारीवादी गानों के कैसेट
"तोड़ो बन्धन"-जागोरी